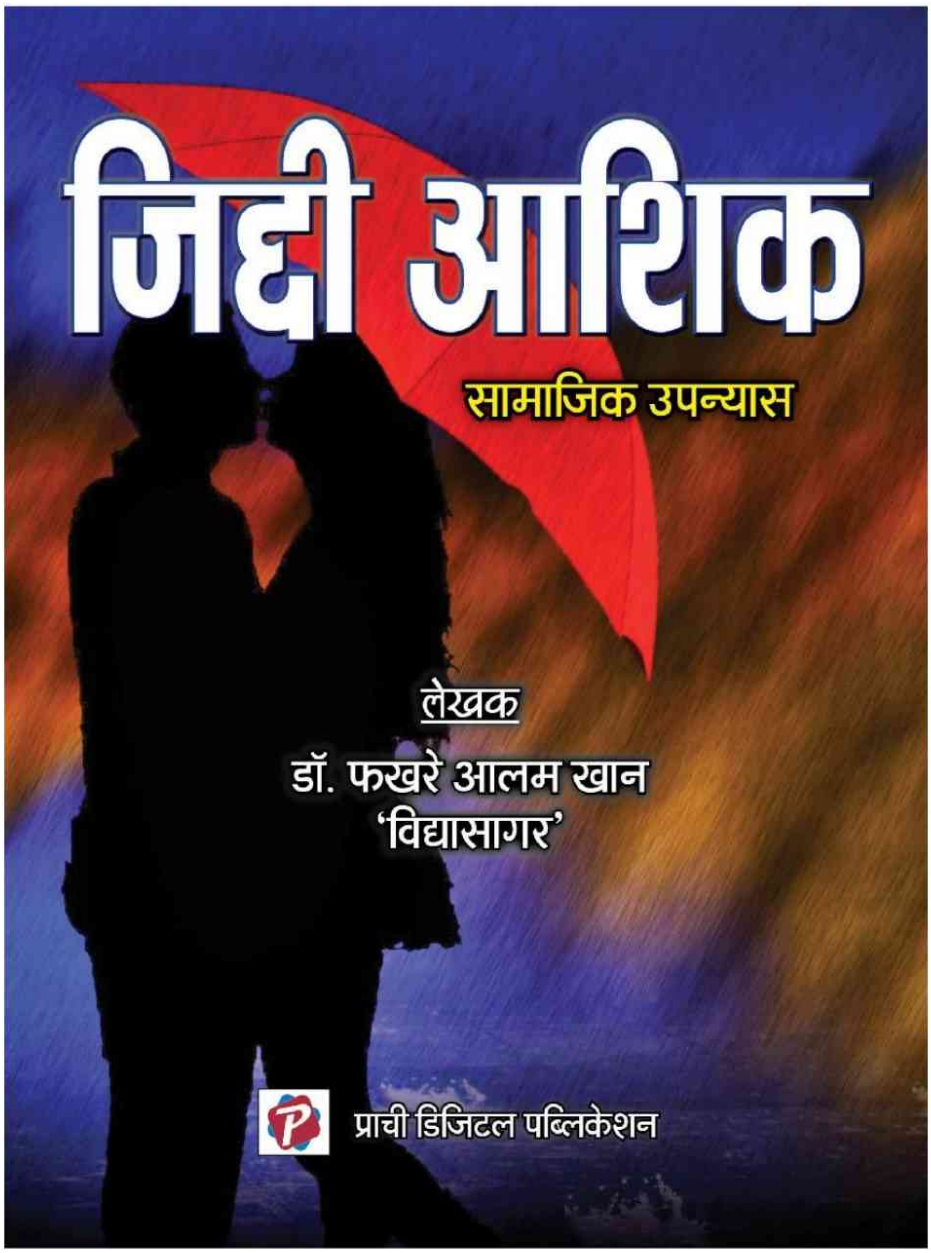
जिद्दी आशिक
सामाजिक उपन्यास
लेखक
डॉ. फखरे आलम खान
'विद्यासागर'
प्राची डिजिटल पब्लिकेशन

लेखक
डा. फखरे आलम खान 'विद्यासागर'
eISBN : 978-81-934483-8-0

संस्करण : प्रथम (2017)

संपादन : **आबिद रिज़वी**

प्रकाशक
प्राची डिजिटल पब्लिकेशन,
386/2, सुभाष नगर, मेरठ,
उत्तर प्रदेश - 250001
वेबसाईट : www.prachidigital.in
ई-मेल : info@prachidigital.in
सम्पर्क सूत्र : +91-9760-417-980

नोट : उपरोक्त कहानी संग्रह में प्रकाशित सभी कहानियों के कॉपीराइट अधिकार लेखक डा. फखरे आलम खान के पास सुरक्षित है, इसलिए कोई भी व्यक्ति या संस्थान इस पुस्तक से किसी भी रचना को तोड़-मरोड़कर, कोई भी आंशिक या पूर्णरूप से या अन्य भाषा में प्रकाशित करने का प्रयास करता है तो वह कानूनी रूप से हर्जे-खर्चे व हानि का जिम्मेदार होगा।

सम्पादक की कलम से...

युवा पीढ़ी के लेखकों में फखरे आलम के लिए यदि कहा जाए कि वे किरदारों के संगतराश हैं तो अतिश्योक्ति न होगी। उपन्यास के पात्रों को वे इतने सहज ढंग से चुनते हैं कि पढ़ते हुए लगता है वो हमारे आसपास के हैं। अड़ोस-पड़ोस के, हमारी बस्ती-कूंचे के पात्रों की जिन्दगी की कहानी वे इतनी आसानी से बुनते चले जाते हैं कि लगता है, सब कुछ आंखों के सामने घटता चला जा रहा है।

प्रस्तुत उपन्यास 'जिद्दी आशिक'का नायक अमन और नायिका फरजाना को भी लेखक ने उसी सहजता से पेश किया है जैसा कि पूर्व के उपन्यासों में वे पेश करते रहे हैं। कथानक में पात्र के संघर्ष की प्रेरणा है। शुरू में मुश्किल से ही इस बात का यकीन होता है कि एक अत्यन्त गरीब, मजदूरपेशा नौजवान चांद को छूने की कोशिश करते हुए कामयाब हो जाएगा? लेकिन नायक की जिद्द है कि वह फरजाना को पाकर रहेगा। यह जिद्द किसी नासमझ नौजवान की नहीं, हौसलामंद इंसान की होती है; इसलिए उसका हर पग कामयाबी की मंजिले छूता चला जाता है।

एकदम साफ-साफ इस सामाजिक उपन्यास में संघर्ष भी है और दौलत के पहरेदारों की खींची हुई बंदिशें भी है। नायक, संघर्षों के साथ हर बंदिशों को पार करता मंजिल को पाकर रहता है। यह कैसे और क्योंकर होता है, इसे आप उपन्यास की चाशनी में डूबकर जान पाएंगे।

मेरी नेक ख्वाहिश फखरे आलम के साथ है। उपन्यास 'जिद्दी आशिक' पढ़िए और अपनी बेबाक राय लेखक के पत्ते पर पत्र लिखकर देना न भूलें। आपके पत्र फखरे आलम के रहबर भी बनेंगे और प्रेरणास्त्रोत भी!

दिनांक: 23 जुलाई, 2015

फ़क़त

आबिद रिजवी

लेखकीय...

मेरे स्नेही पाठकों!

आपकी सेवा में आपका नया नवेला सामाजिक उपन्यास 'जिद्दी आशिक' पेश करते हुए मुझे हार्दिक संतोष है। इससे पूर्व पारस प्रकाशन से प्रकाशित मेरी सामाजिक कहानियों का संकलन 'नई मंजिल, नई राहें' आपने पढ़ा और सराहा। प्रशंसा के पत्र भेजे। मैं दिल से आपका शुक्रगुजार हूं।

मेरे अजीज पाठकों ने 'नई मंजिल, नई राहें' की अलग-अलग कहानियों और दोनों लघु उपन्यासों के प्रति अलग-अलग अंदाज से अपनी राय लिखी जो कि स्वाभाविक थी। किन्हीं साहब को कोई कहानी ज्याद पसन्द आई, कोई कम। इसका मुझे गिला नहीं क्योंकि पसंद अपनी-अपनी, ख्याल अपना-अपना। बहरहाल आपने संकलन पसंद किया, चाहें कोई कम चाहे कोई ज्यादह मुझे खुशी हुई। चमन में हर रंग के फूल खिलते हैं। किसी को कोई रंग पसंद आता है, किसी कोई दूसरा, तीसरा रंग। यही बात मेरी कहानियों के संकलन पर भी लागू होती है।

अब आइए, अपने प्रस्तुत उपन्यास 'जिद्दी आशिक' की बात कर लूं। मेरे इस उपन्यास के शीर्षक 'जिद्द' से आप यह अर्थ न लगाइएगा कि उपन्यास का नायक 'जिद्द' के आगे नुकसान उठाता है। उनकी जिन्दगी में 'जिद्द के आगे जीत है' का कथन चरितार्थ होता है। उपन्यास के नायक का चरित्र ऐसे प्रेमरोगी के रूप में सामने आता है, जो नायिका के लिए पहली नजर के प्यार में डूब जाता है। उसके प्यार की भावुकता को कुछ दिनों बाद नायिका भी महसूस करके उसे अपने लिए एक आदर्श शौहर के रूप में स्वीकार कर लेती है। परन्तु दोनों के सामने यह कहावत चरितार्थ होती है ये इश्क नहीं आसां, बस इतना समझ लीजे, इक आग का दरिया है और डूब के जाना है।

बुलन्द हौसलों वाला नायक हर मुसीबतों और मुश्किलों को पार करता अपनी मंजिल को अन्ततः पा लेता है। इस रूप में उपन्यास का कथानक सुखान्त है। उपन्यास आपको दर्द की टीस का भी एहसास दिलाएगा तथा सामाजिक रूढ़ियों के लिए आक्रोश में भी भर देगा। बहरहाल उपन्यास हर हाल में पसंद आएगा; ऐसा विश्वास है। उपन्यास पढ़कर अपनी राय से अवगत कराएं। शुक्रगुजार रहूंगा।

आपका

डॉॉ फ़ख़रे आलम ख़ान 'विद्यासागर'

फोन नं. 09319319391

"आज जिन्दगी के सफर का एक पड़ाव पूरा हो गया। मैंने इस पड़ाव में अपनी एक मात्र लड़की की शादी अपने हाथों से कर दी, मुझे सन्तोष है, खुदा ने जो फर्ज मुझे दिया था, वह आज पूरा हो गया।"

"तुम खुशनसीब हो कि तुम्हारी औलाद ने यह फर्ज पूरा करने का मौका तुम्हें दिया।"

"क्या मतलब? तुम क्या कहना चाहते हो?"

"जो मैं कहना चाहता हूं तुम अच्छी तरह समझ रहे हो। तुम आज एक लड़की के बाप हो और समझते हो लड़की की डोली उठाने के बाद कैसा महसूस होता है। बहुत लोग इस फर्ज से वंछित रह जाते हैं। उन पर क्या गुजरती है, तुम्हें इस बात का एहसास हो जाना चाहिए। बचपन अन्धा होता है, उसे अच्छे-बुरे की तहजीब नहीं होती इसी कारण वह ऐसे फैसले कर लेते है जिनका अन्त बहुत कम अच्छा होता है। समाज मे रुसवाई के अलावा और कुछ हाथ नहीं आता। माता-पिता अपनी औलाद की गलती के कारण जिन्दा ही मर जाते हैं। तुमने भी अपनी जिन्दगी में ऐसी गलती की थी, फरजाना से शादी करके।"

"वह बात पुरानी हो चुकी है।"

बात पुरानी भले हो जाये; परन्तु जो जख्म तुमने अपने माता-पिता को दिया है, जिसकी रुसवाई को उन्होंने झेला है, वह आज भी उसे याद करके कांप जाते होंगे। तुम एक मजदूर के बेटे थे जबकि तुम्हारी पत्नी एक अमीर बाप की बेटी थी। जो तुम्हारे निकाह में आई। फरजाना के माता-पिता ने क्या सपने संजोये होंगे, जिसे तुमने चकनाचूर कर दिया था। आज तुम्हारे पास पैसा, इज्जत सब कुछ हैं। तुमने कड़ी मेहनत करके यह मुकाम हासिल किया है। तुम अनपढ़ थे तुम्हारी पत्नी अग्रेजी स्कूल में पढ़ती थी। तुमने इश्क के चक्कर में उसकी जिन्दगी को कहां पहुंचा दिया, कभी इस बात पर गौर किया है?"

"खान साहब! मुझे अपनी गलती का एहसास हो रहा है। जब मैं एक लड़की का बाप हूं और उसे डोली में बैठाकर विदा कर रहा हूं। लेकिन मैंने कभी उसके साथ नाइन्साफी नहीं की है। उसकी हर सुख-सुविधा का ख्याल रखा। मैं एक मजदूर था फिर भी मैंने उसकी पढाई पूरी कराकर उसे इस काबिल कर दिया कि वह अपने पैरों पर खड़ी हो सके। आज वह अंग्रेजी स्कूल में अध्यापक है, और अच्छी जिन्दगी गुजर रही है।"

"तुम गलत कह रहे हो, वह जिस मुकाम पर आज है, वह उसकी अपनी मेहनत है। अगर तुमसे उसकी शादी न होती तो किसी अफसर या बिजनेसमैन की पत्नी होती। आज उसी के मुकाम से तुम समाज में इज्जत पाये हो। यह वक्त का सबसे बड़ा कड़वा सच है। तुम तो आज भी एक मजदूर हो, बस थोड़ा रूप बदल गया है। मजदूरी की जगह आज आपका अपना कपड़े का व्यापार है। लेकिन तुम अपनी पत्नी के मुकाम तक नहीं पहुंच सके। वह आज भी अपनी मेहनत के बल पर समाज में एक अच्छा मुकाम हासिल कर सकी है।"

“खान साहब! मैं आपकी हर बात से सहमत हूं। मेरा लड़कपन था, मुझमें सोचने-समझने की ताकत नहीं थी, मुझे तो फरजाना की खूबसूरती ने दिवाना बना दिया था। मैं उसे पाने के लिए मैं अपनी औकात भूल गया मेरे पास मेरी खूबसूरती के अलावा एक अम्बेसेडर गाड़ी थी जिसे चलाकर मैं अपनी जीविका चलाता था।”

“यह इश्क की कहानी कैसे शुरू हुई।”

“यह लम्बी दास्तां है। आज तुमने पूछा तो मैं अपने जिन्दगी के पन्ने खोलना शुरू करता हूं। सुनो! फरजाना से मैंरे इश्क की कहानी।

...

“यार यह लड़की बहुत खूबसूरत है।”

“तुम भी तो कम खूबसूरत नहीं हो, तुम्हें देखकर कौन लड़की तुम्हारी तरफ प्यार से नहीं देखेगी, कमी एक है।”

“वह क्या?”

“तुम पढ़े-लिखे नहीं हो।”

“यार इश्क पढ़ा-लिखा नहीं देखता, वह तो दिल से हो जाता है, जैसे मुझे हो गया है। मैं उसे पाना चाहता हूं इसके लिए कोई तरकीब बताओ जिससे मैं इसके पास जा सकूं और दो बात कर सकूं।”

“तरकीब तो मेरे पास है, तुम क्या कर सकते हो?”

“मैं इसे पाने के लिए सब कुछ कर सकता हूं। तुम तरकीब तो बताओ।”

“रिक्शा है इससे बात करने का तरीका।”

“रिक्शा? मैं समझा नहीं। “

“तुम इश्क करते हो और समझते नहीं।”

“समझाओगे तो तभी तो समझूंगा।”

“यह लड़की कैंन्ट से आती है, वह भी रिक्शे में, अगर तुम रिक्शा चलाना सीख लो तो तुम्हारी राह आसान हो जायेगी। तुम इसे अपने रिक्शे में बैठाकर रास्ते में आसानी से बात कर सकते हो।”

“यही ठीक रहेगा। पर मुझे तो रिक्शा चलाना नहीं आता।”

“रिक्शा चलाना मैं सिखा दूंगा।”

“ठीक है, तू मुझे मुझे आज ही रिक्शा चलाना सिखा।”

“गाड़ी यही खड़ी करो और लो रिक्शे की गद्दी पर बैठो तथा चलाओ।”

अमन ने जी जान से दो दिन में रिक्शा चलाना सीखा। तीसरे दिन अमन स्कूल के गेट से कुछ दूरी पर रिक्शा लेकर खड़ा हो गया और लड़की का इन्तजार करने लगा, थोड़ी देर बाद लड़की स्कूल से निकली। अमन की आंखें लड़की को ढूंढ रही थी। लड़की बाहर स्कूल के गेट पर पहुंची। अमन दौड़कर लड़की के पास पहुंचा और बोला “मैडम रिक्शा तैयार है, आइये।”

लड़की ने रिक्शे वाले की पर्सनल्टी पर नजर डाली, जो खूबसूरत था, लड़की मुस्कराई और बोली “आपका रिक्शा कहां है?”

“वह खड़ा।” रिक्शे की तरफ इशारा करते हुए अमन ने कहा।

"चलो।" लड़की अमन के साथ रिक्शे तक पहुंचकर रिक्शे में बैठ जाती है। अमन रिक्शा लेकर मन्जिल की राह की तरफ चल देता है। अमन चुप था और सोच रहा था, बात कहां से शुरू करूं? लड़की भी बात करना चाहती थी लेकिन बात कैसे शुरू की जाए। इसी जुस्तजू में करीब दस मिनट निकल गये। लड़की ने हिम्मत करके कहा "मैं एक बात पूछूं?"

"पूछो मैडम, क्या पूछना चाहती हो?"

"आप रिक्शा चालक तो नहीं लग रहे हो। लगता है कि किसी मजबूरी में रिक्शे का हैन्डिल पकडा है।"

"मैडम कुछ मजबूरी इन्सान की ऐसी होती है जिसके कारण आदमी वह काम करने पर मजबूर हो जाता है जो उसे नहीं करना चाहिए। मुझे भी वही परेशानी थी मुझे अपनी मन्जिल पानी है, जो मुझे रिक्शा चलाकर ही मिल सकती थी। इसलिए मैंने रिक्शे का हैन्डिल पकड़ा है। मुझे खुदा पर भरोसा है मुझे मन्जिल मिल जायेगी।"

"आपकी ऐसी मन्जिल कौन-सी है जो रिक्शे से मिलेगी।"

"मैडम मौका मिला तो आपको बताऊंगा, अभी तो मन्जिल का पहला पड़ाव है। मैडम मैं आपसे आपका नाम पूछने की जुरर्त कर सकता हूं।"

"अब तो आपने जुरर्त कर ही ली है, मुझे फरजाना कहते हैं।"

"मैडम मेरा नाम अमन है। मैं भी आपके शहर का रहने वाला हूं। मैडम मुझे मन्जिल की तलाश थी, इसलिए यह काम कर रहा हूं।"

"खैर तुम जानो जिन्दगी तुम्हारी है चाहे जैसे जियो मैं कौन होती हूं आपकी जिन्दगी में दखल देने वाली।" कहते हुए मैडम ने रिक्शा सड़क पर मुड़वाते हुए कहा "इस गली में चलो।"

"ठीक है मैडम!"

थोड़ी दूर चलकर आगे एक शानदार कोठी आती है। मैडम रिक्शे वाले को कहती हैं "बस रुको मुझे यही तक जाना था।"

"मैडम आपका बंगला तो बहुत शानदार है।"

"खुदा का शुक्र है। मेरे वालिद का अच्छा कारोबार है। इसलिए यह बंगला है। आज के दौर में लोग किस तरह अपनी जिन्दगी काटते हैं। तुम बताओ कितने पैसे हुए?"

"मैडम मुझे पैसे की जरूरत कहां दिल की इच्छा थी आपको अपने रिक्शे में बैठाकर आपके घर छोड़ दूं, तो आज मेरी खुवाहिश पूरी हो गई।"

"तुम जितने खूबसूरत हो उतनी ही खूबसूरती से बाते भी करना जानते हो, लो यह बीस रुपये रख लो।"

"नहीं मैडम, मैं आपसे पैसे नहीं लूंगा।"

"क्यों आपने मेहनत की है, मेहनत करने वाले के पैसे अगर नहीं दूंगी तो यह ज्यादती होगी। तुम यह रख लो।"

"ठीक है, अगर आप कहती है तो रख लेता हूं।"

"सुबह कितने बजे स्कूल जाती हैं?"

"सुबह सात बजे।"

"ठीक है, मैं सुबह आपको लेने आऊंगा।"

"ठीक है।" फरजाना मुस्कराती हुई अपने घर में चली जाती है।

...

अमन खुश है, खुदा ने रिक्शे के बहाने इतना मौका तो दिया कि फरजाना का घर देखा, और दो बात हो गई।

आज मेरी जिन्दगी का सबसे अच्छा दिन है। आगे क्या होता है? खुदा ही जाने आज कम-से-कम आस तो बंधी है। एक खुशगवार माहौल तो तैयार हुआ है।

यही सोचता हुआ वह अपने दोस्त नासिर के पास आ जाता है।

नासिर ने अमन को रिक्शा चलाना सिखाया था। नासिर ने अमन से कहा "अमन तुम्हारा आज पहला दिन था, कैसा रहा आज का दिन?"

"नासिर भाई मत पूछो आज जिन्दगी को जिन्दगी से मिलने की आस जगी है।"

"रास्ते में कोई बात भी कि या यूं ही मुंह बन्द किये घर तक पहुंच गये।"

"नहीं-नहीं नासिर भाई उसका नाम फरजाना है तथा यही से कुछ दूरी पर रहती है।"

"उसका घर कैसा है?"

"अरे बड़े बाप की बेटी है, घर कहां उसकी तो आलीशान कोठी है।"

"फिर तो तुम्हारा इश्क करना बेकार है।"

"क्यों?"

"इसकी वजह तुम जानते हो तुम एक टाट का टुकडा हो वह मखमल है। मखमल मे टाट का पैबन्द नहीं लगता। दोस्ती अपने बराबर के लोगों से की जाती है, वरना ऐसी दोस्ती हमेशा बीच में खाई ही पैदा करती है।"

"मैं उसे पाने के लिए दिन रात मेहनत करूंगा।"

"तुम कितना कमा लोगे, मत भूलो तुम एक टैक्सी ड्राइवर हो। दिन-रात मेहनत करके तुम उसके कुत्तों को खिलाने लायक ही कमा पाओगे। वह एक शहजादी की तरह अपनी जिन्दगी जी रही है। तुम मेहनत करके भी उसकी खुवाहिश पूरी नहीं कर सकते। आदमी को वही रास्ता अखत्यार करना चाहिए जिसमे मन्जिल पाने की गुंजइश हो। मैं मानता हूं कि इश्क अन्धा होता है, वह ऊंच-नीच की दीवार नहीं देखता, लेकिन कुछ दिन बीतने के बाद मौहब्बत नफरत में बदलना शुरू हो जाती है। यही जिन्दगी जो आज अच्छी लग रही है, खुद बोझ बनने लगती है। इसलिए अमन भाई मेरी सलाह मानों जिस रास्ते पर तुम आज चले हो उसे यही रोक दो, इसमें दोनों की भलाई है। जिन्दगी एक लम्बा सफर है, इसको जीने के लिए सुख-शान्ति की जरूरत होती है। मैं तुम्हारा सच्चा दोस्त हूं इसलिए इस रास्ते पर चलना कठिन ही नहीं नामुमकिन है। इसलिए इस रास्ते को बन्द कर दो। तुम्हारी तमन्ना बात करने की थी, सो पूरी हो गई।"

"नासिर भाई! जो तुमने कहा सब सही है, जबसे मैंने उसको देखा है, उसे पाने की तमन्ना जाग गयी है। हां मैं अपनी औकात जानता हूं, मैं उसके सामने कहीं नहीं टिकता। वह पैसे वाली है, मैं मजदूर हूं। लेकिन नासिर भाई मैं उसे मजबूर कर दूंगा कि वह मुझसे मिलने के लिए हर आग का दरिया पार करके मेरे पास चली आएगी। मुझे फरजाना की दौलत से नहीं फरजाना से प्यार हुआ है, प्यार करने वाले दौलत को नहीं प्यार को तवज्जो देते हैं।"

"अमन भाई, तुम अभी जवान हो, जवानी के नशे में डूबे हो। इसलिए अच्छे बुरे की तरफ ध्यान नहीं दे रहे हो। मैं तो सिर्फ यही कह सकता हूं, खुदा तुम पर अपनी रहमत करें। इश्क एक तरफा नहीं होता। इश्क के लिए दोनों ही बराबर साथ चलें। फरजाना का भी जवाब आना जरूरी है।"

"नासिर भाई अब तुम लाइन पर आये हो। मैं भी फरजाना के जवाब का इन्तजार करके ही आगे का कदम बढ़ाऊंगा। अब आप अपनी रिक्शा पकड़ो। मैं टैक्सी स्टैंण्ड पर पहुंचता हूं। कोई सवारी मिले तो घर के खर्च का काम चलें, वरना घर में चूल्हा नहीं जलेगा। तीन बज चुके हैं, अब स्टैण्ड पर पहुंचता हूं। मुझे खुदा से उम्मीद है वह हमारे खर्च के लायक पैसे जरूर देगा। खुदा लोगों को भूखा कभी नहीं सुलाता। हां भूखा उठाता जरूर है।"

"अमन भाई! भूखा इसलिए उठाता है कि दुनिया में वह अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करके अपना तथा अपने माता-पिता का पेट भरे, और एक तुम हो सारा दिन इश्क में टाइम गवां दिया। अब खाने कमाने की याद आई है। खुदा भी उसी की मदद करता है जो अपनी मदद आप करना चाहते हो। पेट उनका भरता है जो पेट भरने के लिए जूस्तूजू करते हैं। तुम जैसे लोगो को तो भूखा ही सुलाएगा। अब वक्त बरबाद मत करो अपने काम की तरफ ध्यान दो। तुम्हारे कर्मों की सजा में पेट भूखा न रह जाए।"

"अच्छा नासिर भाई मैं चलता हूं। सुबह छः बजे तुम्हारे पास आऊंगा रिक्शा लेने।"

"ठीक है, खुदा हाफिज।"

...

अमन अपनी टैक्सी पर पहुंच जाता है। नासिर सोचता है। अमन जवानी के आगोश में डूबा है, खूबसूरत है। फरजाना इसके बदन व खूबसूरती पर दिवानी हो सकती है। फरजाना भी नादान है। उसे भी अभी अच्छे-बुरे की पहचान कहां होगी। मेरे अल्लाह दोनो को समझ दें, वह इश्क से दूर ही रहे तो दोनो के हक में यही अच्छा होगा। सोचता हुआ अपना रिक्शा उठा नासिर भी अपने काम में लग जाता है।

फरजाना घर के अन्दर आकर अमन के बारे में सोचती है, कि शक्ल सूरत से तो अमन रिक्शे वाला नहीं लगता। खूबसूरत है, अमन जैसे लोग खूबसूरती में हजारो में एक होता है। हो सकता है, वक्त की मार ने अमन को इस दहाने पर लाकर खडा कर दिया हो। जिसे अपना और अपने

परिवार का पेट भरने के लिए रिक्शे का सहारा लेने की जरूरत पेश आई हो। खुदा ऐसे लोगो की आजमाइश ले रहा हो कि वह अपने मां-बाप का फर्ज पूरा करने के लिए रिक्शा तक चलाने से गुरेज नहीं करते। देखा जाए यह समाज इन रिक्शा वालो को बुरी निगाह से देखता है, जबकि खुदा ने हर इन्सान को इन्सान बनाया है। जो विभिन्न पेशों में रहकर अपनी जिम्मेदारी पूरी करने की कोशिश करता है। सबसे अच्छी बात तो यह है कि वह अपना फर्ज निभाने के लिए रिक्शा चला रहा है। हो सकता है वह गलत रास्ता भी चुन सकता था। चोरी-डकैती भी कर सकता था। लेकिन उसने रिक्शा चलाना ही क्यों अच्छा समझा। इस बात से तो यह बात साफ जाहिर हो गई कि वह मेहनत से ही जिन्दगी को आगे बढ़ाना चाहता है। वह छल-कपट को पसन्द नहीं करता, वह खुद्दार है और अपनी खुद्दारी के बल पर ही जीना चाहता है। अमन को पैसे की हवस नहीं है। वह ईमानदारी से जीना चाहता है। बाकी खुदा जाने वह रिक्शा क्यों चला रहा है? लेकिन इतना तो तय है अमन एक ईमानदार खुद्दार आदमी है। बाकी आगे क्या होगा खुदा जाने, अमन ने सुबह आने का वादा किया है, पता नहीं वह आयेगा भी या नहीं। अगर आ जायेगा तो मैं अमन की जिन्दगी के बारे में पूछताछ जरूर करूंगी और अच्छा आदमी निकला तो उसे रिक्शा चलाने से मना कर दूंगी। कुछ पैसे देकर कारोबार करने को कहूंगी। यही से उसकी खुददारी का भी पता चल जायेगा। वह पैसे पकड़ता है या रिक्शा चलाकर अपनी जिन्दगी को आगे ले जाता है।

काफी रात हो चुकी है, सुबह स्कूल भी जाना है, अगर देर से सोऊंगी तो सुबह न उठ सकूंगी। सोचकर फरजाना अपने कमरे की लाईट बुझा देती है और सो जाती है।

अगले दिन सुबह पांच बजे अमन नहा धोकर तैयार हुआ, जैसे ही बाहर जाने के लिए अपने कमरे से बाहर आया, तभी अमन की मां ने कहा “अमन आज तो बहुत सवेरे तैयार हो गया है, आज कही बाहर जाना है?”

“नहीं अम्मी बाहर तो नहीं जाना, मैंने सुना है, रोटी-रोजी की तलाश सवेरे करनी चाहिए। इसलिए मैंने फैसला किया है कि मैं हमेशा इसी वक्त घर से निकला करूंगा। सुबह खुदा से जो भी मांगों अल्लाह कभी अपने बन्दो को मायूस नहीं करता। इसलिए आज खुदा से रोजी के अलावा और कुछ भी मांगना चाहता हूं। देखे खुदा मुझे देता है कि नहीं।”

“बेटा खुदा का काम है अपने बन्दो को देना पर जो मांगों जायज मांगना अल्लाह दिलों का हाल जानता है, वह बदकार को भी देता है और नेक लोगों को भी देता है। अब पता नहीं तुम्हारी नियत कैसी है। अल्लाह तुम्हारी जायज मुराद पूरी करे। मां तो यही चाहती है औलाद को सुख में ही मां का सुख है। जाओ खुदा तुम्हारी मदद करे, तुम्हें हलाल रोजी अता करें।”

“आमीन!” कह उसने मां का आर्शीवाद लिया और अपनी अनजान राह की तरफ चल दिया।

थोड़ी देर बाद नासिर के घर पर आया रिक्शा ली और फिर फरजाना के गेट पर खड़ा हो गया।

थोड़ी देर बाद फरजाना ने अपने बंगले का दरवाजा खोला तो सामने अमन खडा था। अमन को देखकर फरजाना मुस्कराई और रिक्शे में आकर बैठ गई। अमन भी मुस्कराता हुआ स्कूल की तरफ चल दिया।

फरजाना ने बात को आगे बढ़ाते हुए अमन से पूछा "अमन मैं तुमसे कुछ पूछना चाहती हूं। मेरे जहन में कुछ ऐसे सवालात उभर रहे हैं, जिनके कारण मैं रात भर परेशान रही। जिनका जवाब आप ईमानदारी से देना।"

"पूछो मैडम, क्या पूछना चाहती हो?"

"तुम शक्ल सूरत से तो रिक्शे वाले नहीं लगते किस मजबूरी में रिक्शा चला रहे हो?"

"मैंडम आपने सही कहा, मैं रिक्शा वाला नहीं हूं। मैंने रिक्शा चलाना आपकी खातिर सीखा है।"

"क्या मतलब? मेरी खातिर क्यों?"

"मैडम मेरी एक अम्बेसेडर कार है। मैं उसी को चलाता हूं।"

"इसका क्या मतलब? तुम रिक्शा चलाते हो अब कह रहे हो कार चलाता हूं।"

"मैडम मेरी बात तो पूरी होने दो।"

"चलो अपनी बात पूरी करो।"

"जहां आपका स्कूल है, वही थोड़ी दूरी पर टैक्सी स्टैंण्ड है। आपका रिक्शा, स्टैंण्ड के सामने से होकर गुजरता था, आपकी सूबसूरती ने मुझे पागल कर दिया। आपसे बात करने का कोई और रास्ता मुझे नजर नहीं आया, इसी कारण मैंने रिक्शा चलाना सीखा और आप से बात की। आप यकीन नहीं करोगी आपसे बात करके मैंने दुनिया की हर खुशी हासिल कर ली। यह है मेरे रिक्शा चलाने का राज।"

"अमन तुमने मेरे खातिर रिक्शा चलाया। मैं चाहती हूं कि अब आप रिक्शा न चलाए।"

"इसका मतलब आप मुझे अपने से अलग करना चाहती हैं। रिक्शा ही आपसे मिलने व बात करने का एक रास्ता है। मैं अपनी गाड़ी से आपके करीब नहीं आ सकता था।"

"यह तो ठीक है, पर?"

"मैं रिक्शा नहीं चलाता, मैं तुम्हें स्कूल छोडकर फिर अपनी गाड़ी पर पहुंच जाता हूं। तुम्हारी स्कूल की छुटटी पर तुम्हें लेने आता हूं।"

"तो ठीक है, मुझे तुम्हारी सच्चाई जान कर दिल को सकून हुआ वरना।"

"वरना क्या मैडम?"

"आज के बाद मुझे मैडम नहीं नाम से पुकारोगे, लो स्कूल आ गया। दोपहर तक छुट्टी पर फिर आपसे मुलाकात होगी, अपना ख्याल रखना। अब चलती हूं।" कहकर फरजाना स्कूल में चली जाती है। अमन खुशी-

खुशी रिक्शा नासिर को देकर अपने स्टैण्ड पर आकर बैठ जाता है और फरजाना की यादों में खो जाता है।

फरजाना अपनी क्लास में आकर अमन की बताई हुई बातों में खोई हुई रहती है और सोचती है इन्सान मुझसे बात करने की ख्वाहिश में रिक्शा चलाने पर मजबूर है। अमन मुझसे वाकई दिल से मोहब्बत करता है, तभी तो उसने रिक्शा चलाना सीखा।

फरजाना का मन पढ़ाई में नहीं लग रहा था। वह तो केवल अमन की यादों में खोई हुई थी। तभी उसकी सहेली ने फरजाना से पूछा "फरजाना आज तुम कुछ खोई-खोई नजर आ रही हो। आज तुम्हारा ध्यान पढ़ाई में नहीं कही और नजर आ रहा है, लगता है फरजाना कही किसी को दिल तो नहीं दे बैठी।"

"नहीं बहन ऐसी बात नहीं जो तुम समझ बैठी, बात ऐसी है एक लड़का जिसका नाम अमन है, अमन ने मुझसे बात करने की खातिर रिक्शा चलाना सीखा, अब रिक्शा लेकर मुझे स्कूल से घर और घर से स्कूल छोड़ने आता है।"

"तुम हो ही इतनी खूबसूरत कोई भी मर्द तुम्हें देखकर यही चाहेगा कि दो बात कर लूं। लेकिन फरजाना...।"

"नगमा तुम बात करते-करते क्यों रुक गई? अपनी बात कहो।"

"फरजाना आज के मर्दो में केवल वासना झलकती है, वह वासना को शान्त करने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। ऐसा न हो कि वह तुझे अपनी हवस का शिकार बनाकर सड़कों पर बदनाम जिन्दगी गुजारने के लिए न छोड़ दें।"

"नगमा, उसकी बातों से ऐसा नहीं लगता है, खूबसूरत है।"

"खूबसूरती के पीछे ही वासना छिपी रहती है, अगर फरजाना तू खूबसूरत न होती तो अमन तेरा क्यों दीवाना होता। रही ताल्लुकात की बात यह उम्र भी खूबसूरत लड़कों की तरफ अपने आप झुक जाती है। दिल बहलाने तक सीमित रहना आगे कदम मत बढ़ाना वरना नुकसान के अलावा और कुछ नहीं पाओगी।"

"बहन नगमा तुम सही कहती हो, मुझे पहले अमन को हर तरह से आजमाना होगा। अगर वह मेरे इम्तीहान में कामयाब हो जाएगा तभी आगे बात करूंगी।"

"ठीक है, बहन। जिन्दगी तुम्हारी है तुम्हे सोच समझ कर फैसला करना है।" इतनी बात करके दोनों अपनी क्लास में पढ़ाई में लग जाती हैं।

अमन फरजाना को अपने बारे में बताकर बहुत खुश है और सोच रहा है कि मैंने फरजाना को अपनी जिन्दगी का सच बता दिया। मेरे सच बताने से फरजाना मुझ पर एतबार करने लगेगी, और मेरे नजदीक आने की कोशिश करेगी। यही सोचते-सोचते स्कूल की छुटटी का वक्त हो जाता है। अमन जल्दी-जल्दी अपने दोस्त नासिर के पास पहुंचता है, नासिर का रिक्शा लेकर स्कूल के गेट पर फरजाना का इन्तजार करता है।

कुछ मिनटों बाद फरजना स्कूल से बाहर आती है। अमन फरजाना को देखकर मुस्कराने लगता है, फरजाना भी अमन को देख कर मुस्कराती है और रिक्शे में बैठ जाती है। अमन रिक्शा लेकर अपनी मन्जिल की तलाश में आगे चल पड़ता है। थोड़ी दूर चलने पर फरजाना अमन से कहती है

"अमन तुम कोई कारोबार क्यों नहीं कर लेते?"

"फरजाना घर का खर्च गाड़ी चलाकर निकल जाता है, मेरे घर का खर्च इतना नहीं है जो मुझे ज्यादा मेहनत करनी पड़े। मैं अपनी कमाई से सन्तुष्ट हूं।"

"अमन इन्सान को लकीर का फकीर नहीं बनना चाहिए। यह जवानी इन्सान को कुदरत से एक बार मिलती है। इस जवानी का अगर सही इस्तेमाल न हो तो इन्सान बुढ़ापे में पश्चाताप करता है। आदमी को चाहिए जवानी खूब मेहनत से कमाये जिसका लाभ उसे बुढ़ापे में मिलता है। इसलिए मैं चाहती हूं। तुम खूबसूरत हो और आपके बदन में जान है, टैक्सी छोड़कर कोई कारोबार करो ताकि आगे की राह हमवार हो।"

"फरजाना मैं इतना अमीर नहीं हूं जो कुछ और कारोबार कर सकूं। कारोबार के लिए पैसा चाहिए वह मेरे पास नहीं है। इसलिए मेरी मजबूरी है मुझे अपने सीमित साधनों से ही अपनी जिन्दगी को आगे बढ़ाना होगा।"

"अमन तुम्हारी जवानी और हुस्न पर यह रिक्शा या टैक्सी अच्छी नहीं लगती, इसलिए मैं चाहती हूं कि आप करोबार करें।"

"पैसा कहां से लाऊं?" अमन ने कहा।

"पैसा मैं दूंगी। तुम कारोबार के लिए तैयार हो?"

"नहीं फरजाना मैं तुम्हारे पैसे की तरफ नहीं हूं। मुझे तुमसे मौहब्बत है, पैसे से नहीं। रही कारोबार की बात मैं उसके लिए अपनी गाड़ी बेचकर कुछ भी कारोबार कर सकता हूं।"

"फिर क्यों नहीं करते?"

"फिर तुम्हें देखने से महरूम हो जाऊंगा।"

"तुम मेरी फिक्र छोड़ो मैं आपसे वादा करती हूं कि तुमसे मिलती रहूंगी और जब तुम लायक हो जाओगे तो तुम से शादी भी करूंगी। मैं तुम्हारे कामयाब होने तक तुम्हारा इन्तजार करूंगी।"

"ठीक है, फरजाना मैं कल से अपनी गाड़ी बेचकर कपड़े का कारोबार शुरू करता हूं।"

"हां, यह हुई न बात। किस्मत का कुछ नहीं पता कब चमक जाए?"

बात करते-करते फरजाना का घर आ जाता है। फरजाना खुशी-खुशी अपने घर में चली जाती है।

अमन मंुह लटकाए जिन्दगी की नई शुरुआत के लिए वापस चला आता है।

...

"बेटा! बड़े उदास हो, कोई झगड़ा हो गया है?"

"नहीं मां ऐसी बात नहीं है, मेरा मन गाड़ी से हट गया है।"

"फिर क्या करोगें? तुम्हें गाड़ी चलाने के अलावा और कुछ नहीं आता। पढ़े लिखें भी नहीं हो, कही नौकरी कर लो। फिर क्या करोंगे?"

"मां मैं कारोबार करना चाहता हूं।"

"उसमें भी हिसाब किताब रखने के लिए पढ़ा लिखा होना जरूरी है।"

"नहीं मां ऐसी बात नहीं है, बहुत अनपढ़ लोग अपना कारोबार करते हैं। मैं भी करूंगा।"

"कारोबार करने के लिए पैसा चाहिए, जो तुम्हारे पास नहीं है।"

"मेरे पास यह गाडी है, इसे बेचकर कारोबार करूंगा। "

"अपने बड़े भाई चमन से बात करो। तुम्हारे वालिद डिप्टी जेलर थे। रिटायर्ड होने के बाद उन्हें जो पैसा मिला था सब चमन के पास है। चमन ने उस पैसे से तुम्हें गाड़ी लेकर दी थी और अपने कारोबार में पैसा लगाया था। मैं तो सिर्फ तुम्हारे साथ रहती हूं, चमन अपने बीबी-बच्चों के साथ अलग रहता है। थेड़ी देर में आता ही होगा। अमन तुम्हें भूख लगी होगी खाना खा लो।"

"नहीं मां, मुझे भूख नहीं है, मुझे तो कारोबार करना है; बस मां मुझे और कुछ नहीं चाहिए।"

"ठीक है! थोड़ी देर इन्तजार करो, तुम्हारा भाई चमन आता होगा।"

थोड़ी देर बाद चमन भी आ जाता है।

"चमन मैं तुमसे कुछ कहना चाहती हूं।"

"कहो मां ! क्या कहना चाहती हो?"

"बेटा, तुम्हारे बाप के मरने के बाद जो पैसा मिला था सब तुम्हें मैने दे दिया था।"

"मैंने कौन-सा अपने पास रख लिया। यह घर बनवाया, कारोबार में लगाया, अपनी शादी की, और यह कार खरीदी जो अमन चला रहा है। मेरे पास अब कुछ नहीं है।"

"मैं चाहती थी, अमन कुछ कारोबार कर ले, उसे गाड़ी दे दो, अमन उसे बेचकर अपना कारोबार कर ले।"

"अम्मा यह गाड़ी तो मेरे नाम है, इसको गुजारे के लिए चलाने को दे रखी है। यह गाड़ी बेचने के लिए नहीं है। इसका खर्च ही कितना है, चला कर पूरा कर लेता है।"

"बेटा, बाप के पैसों पर दोनों भाई का हक है, अमन तुम्हारा छोटा भाई है। अमन की सुख-सुविधा का तुम्हें ख्याल रखना चाहिए। अगर यह कारोबार करता है और तुम्हारे बराबर में आने की कोशिश कर रहा है तो इसे भी मौका दो, अपनी जिन्दगी जीने का।"

"मां, इसे मैं फूटी कौड़ी भी नहीं दूंगा। मैंने यह गाड़ी अपने लिए बनाई है, मैं नहीं बेचूंगा, अगर इसे कुछ करना है तो अपने दम पर करें।"

"भाई, मैं तुम्हारी और मां की बात बहुत देर से सुन रहा हूं। मैंने आज तक तुम्हें अपने वालिद के रूप में देखा है। मैंने कभी आपसे अपना हिस्सा नहीं मांगा। एक फरमाबरदार की तरह आपके हुक्म को मानता आया हूं। मुझे आज पैसे की जरुरत पड़ी तो आपने आंखें दिखा दी। इस

पैसे पर मेरा भी उतना ही अधिकार है जितना आपका, मुझे पैसा चाहिए।"

"मैं तुम्हें फूटी कौड़ी भी नहीं दूंगा।"

"यह तो मेरे साथ नाइन्साफी हो रही है।"

"अमन मैंने तुम्हें घर में रहने दिया यह क्या कम है।"

"भाई अब तुम मुझे घर से भी बेदखल करना चाहते हो।"

"यह घर मेरे नाम है, तुम्हारा कुछ नहीं है। तुम इसी वक्त घर से निकल जाओ।"

चमन ने अमन का हाथ पकड़ा और घर से बाहर निकाल दिया।

"चमन तूने यह क्या किया? अमन तेरा छोटा भाई है। कुछ पैसे की खातिर उसे घर से निकाल दिया। मत भूल यह पैसा तेरा नहीं है, इस पैसे पर जितना तेरा अधिकार था, उतना ही उसका भी है। पैसा भाई को भाई से कैसे अलग करता है, यह मैंने आज देख लिया। भूल मुझसे ही हुई जो मैने तुझ पर आंख मीच कर एतबार किया। याद रख जिसने भी मां का दिल दुखाया वह कभी सरसब्ज नहीं हुआ। मेरा अमन नादान है, उसे दुनिया का तजरबा नहीं है। वह अपनी जिन्दगी कैसे काटेगा। तूने उसे सड़कों पर एक जिन्दा लाश बनाकर छोड़ दिया है। मुझे अमन पर भरोसा है वह एक दिन जरूर कामयाब होगा। उसकी खुददारी उसे एक दिन जरूर बुलन्दी पर ले जायेगी। अमन ने अभी खाना भी नहीं खाया था, उसे घर से निकाल दिया। पता नहीं उसकी जेब में पैसे भी है या नहीं। अमन रात कहां गुजारेगा?

मां रोते-रोते दरवाजे पर पहुंचती है, घर का दरवाजा खोलती है, अमन नहीं है?

मां रात में इधर-उधर तलाश करती है पर अमन का कुछ पता नहीं, रात का एक बज चुका था। मां अमन को तलाश करती-करती थक चुकी थी।

अमन को न पाकर मायूस होकर घर लौट आती है, और खुदा से यही दुआ करती है "ऐ मेरा खुदा इस परेशानी की घड़ी में अमन को सही सलामत रखना, वह मुसीबत से घबराकर किसी गलत काम में न पड़ जायें। एक मां अपने बच्चे के लिए दुआ के अलावा और क्या दे सकती है। मेरा अमन बहुत भोला है।" रोती हुई घर वापस आकर चारपाई पर लेट जाती है। मां की आंखें अमन के इन्तजार में दरवाजे पर लगी रहती हैं, न जाने कब मां की आंख लगी, वह अमन के फिक्र में सो जाती है।

...

आज क्या जमाना आ गया, चन्द पैसों की खातिर भाई ने मुझे घर से निकाल दिया। मेरी जेब में कुल दस रुपये है, मुझे भूख भी लगी है। चलो किसी होटल में खाना खाया जाय।

अमन रात को एक होटल पर पहुंचता है, खाना खाता है, होटल वाले ने खाने के पांच रुपये लिए। अब अमन के पास पांच रुपये बचे। वह एक आरामघर पहुंचता है, आरामघर में रात गुजारी, सुबह आरामघर वाले ने तीन रुपये लिए। अब अमन के पास दो रुपये बचते हैं। अमन सोच रहा है

कि इन दो रुपयो से कारोबार नहीं हो सकता। मैं किसी के आगे हाथ भी नहीं फैलाऊंगा। मुझे तो कारोबार करना है। तभी उसके दिमाग में अपने दोस्त नासिर का ख्याल आता है। अमन नासिर के पास पहुंचता है और रात का सारा वाक्या अपने दोस्त को सुनाता है।

"अमन यह जिन्दगी बहुत इम्तीहान लेती है। तेरी छोटी सी भूल ने तुझे जिन्दगी का असली रूप दिखा दिया। मर्द वह है जो किसी मुसीबतों से न घबराए बल्कि उनका मुकाबला करें। तुझें मैंने जो रिक्शा चलाना सिखाया था, आज वह हुनर तेरे काम आयेगा। चल तुझे मैं अपनी गारन्टी पर किराये का रिक्शा दिलाता हूं। आज इस रिक्शे से अपनी जिन्दगी का आगाज कर। तेरी तमन्ना कारोबार करने की है, वह इसी रिक्शे से पूरी होगी।"

"वह कैसे नासिर भाई?"

"भाई रिक्शा चलाकर कुछ पैसे इक्टठा कर फिर उस पैसे से कारोबार करना।"

"ठीक है! भाई अभी तो मुझे रिक्शा दिला दो। फिर आगे की सोचते है।"

"अमन मेरी एक बात और माननी होगी।"

"वह क्या नासिर भाई?"

"तुम्हार कोई घर नहीं है, इसलिए शाम को वापस मेरे पास आना होगा। मैं तुम्हे सोने की जगह दूंगा।"

"नहीं भाई तुम्हारा यही बहुत एहसान है कि तुमने मुझे अपनी जिम्मेदारी पर रिक्शा दिलाने की बात कह रहे हो। मैं शाम को आरामघर में रात गुजार लूंगा।"

"नहीं अमन मेरे होते ऐसा नहीं होगा। मैंने तुम्हें केवल आठ दिन अपने पास रखूंगा, जिससे तुम इन आठ दिन में कुछ पैसा इकट्ठा कर सको। तुम्हें कारोबार भी तो करना है, इसलिए तुम्हें एक कमरा किराये का दिला दूंगा। उस कमरे में तुम आराम के साथ अपना कुछ पैसा भी रख सकोगे।"

"ठीक है, भाई! जो भी तुम मेरे बारे में सोचोगे अच्छा ही सोचोगे।"

अमन को लेकर नासिर रिक्शा गैराज पर पहुंचता है। अमन को रिक्शा किराये पर दिला देता है।

अमन रिक्शा पर दिन रात मेहनत करके करीब चार सौ रुपये इकट्ठा कर लेता है।

"नासिर भाई मैंने चार सौ रुपये इकट्ठा कर लिए हैं, अब बताओ मुझे क्या करना है?"

"पहले तो तुम्हें रहने के लिए कमरा किराये पर दिलाता हूं।" नासिर ने अमन को एक कमरा किराये पर सौ रुपये प्रतिमाह का दिलाया। बतौर पेशगी सौ रुपये दिये। सौ रुपये में चारपाई बिस्तरा आदि दिलाया, जिसमें करीब एक सौ पचास रुपये और खर्च हो गये। अब कुल मिलाकर अमन के पास एक सौ पचास रुपये बचे। नासिर ने अमन से कहा "भाई अब आप को एक काम करना होगा।"

"वह क्या?"

"तुम्हें कल सुवेरे उठना पड़ेगा।"

"नासिर भाई क्यों?"

"क्योंकि तुम्हें कारोबार करना है।"

"मेरे पास एक सौ पचास रुपये हैं इनसे कैसे कारोबार शुरू होगा?"

"अमन भाई कारोबार छोटा हो या बड़ा कारोबार, कारोबार होता है।"

"नासिर भाई ऐसा कौन सा कारोबार है जो इतने कम पैसों में शुरू होगा।"

"चाय की दुकानों पर बिस्कुट की सप्लाई, मेरा दोस्त बेकरी वाला है। मैं उससे डेढ़ सौ रुपये देकर माल खरीद दूंगा। यह काम सिर्फ दो घन्टे करना होगा, उसके बाद फिर आप अपना रिक्शा चलाना। शाम को दो घन्टे इस कारोबार में लगाना इस तरह आपको कुछ पैसा भी इक्टठा हो जायेगा। फिर कुछ और कारोबार की कोशिश करेंगे।"

"यही ठीक रहेगा, लेकिन फेरी के लिए साईकिल की जरूरत होगी।"

"अमन भाई साईकिल भी किराये पर मिल जायेगी। तुम इसकी फ्रिक मत करो। साईकिल मैं लाकर दूंगा।"

"नासिर भाई तुम मेरी कितनी मदद कर रहे हो। मैं आपके एहसान कैसे उतार पाऊंगा।"

"भाई अपनों पर एहसान नहीं होता तुम तो मेरे शार्गिद हो और उस्ताद का काम अपने शार्गिद को पैरो पर खड़ा करना होता है। मैं अपना फर्ज पूरा कर रहा हूं। तुम पर एहसान नहीं कर रहा।"

"नासिर भाई कुछ रिश्ते खून से बढ़कर होते हैं। आपका रिश्ता भी उन्हीं रिश्तों में से है। अमन भाई कुछ रिश्ते इन्सान खुद बनाता है, इन्सान के द्वारा बनाए गये रिश्ते खुदा के बनाए गये रिश्तों से मजबूत साबित होते है। जैसे मेरा और तुम्हारा रिश्ता।"

"हां नासिर रिश्ता काम आ रहा है। मैं खुदा से यही दुआ करता हूं कि तुम जैसा दोस्त खुदा हर किसी को दे।"

"अब देर न करो तुम्हें बेकरी वाले के पास जाना है।"

"चलो ठीक है।"

दोनों साथ-साथ बेकरी पहुंचते है। नासिर ने अमन की जिम्मेदारी लेते हुए अमन को बिस्कुट दिला दिये।

अब अमन सुबह पांच बजे उठकर चाय की दुकानों पर बिस्कुट सप्लाई करने लगा।

अमन का काम सुबह दो घन्टे में पूरा हो जाता है। इसके बाद वह रिक्शा चलाता था।

इसी तरह अमन को करीब एक माह गुजर गया। अमन को अब अच्छी आमदनी होने लगी। अमन के पास करीब चार हजार रुपये इकट्ठा हो गए।

अमन की जिन्दगी आराम से गुजरने लगी, लेकिन यह आमदनी फरजाना के काबिल नहीं थी, क्योकि फरजाना एक अमीर बाप की बेटी थी। वह कपड़े का कारोबार करना चाहता था। कपड़े के लिए चार हजार रुपये केवल ऊंट के मुंह में जीरा था। अमन के पास समय भी कम था, लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी। वह हालात से लड़ता रहा। इसी बीच अमन की मुलाकात एक कपड़ा व्यापारी से हो जाती है।

"भाई साहब आदाब!" अमन ने कहा।

"आदाब भाई!" व्यापारी ने जवाब दिया।

फिर पूछा "आप क्या करते है?"

"मैं बिस्कुट की फेरी करता हूं और रिक्शा चलाता हूं।"

"आप मुझसे क्या चाहते हैं और आपका क्या नाम है?"

"मुझे अमन कहते है। मैं कपड़े की फेरी करना चाहता हूं।"

"कपड़े का काम करने के लिए पैसों की जरुरत होती है। क्या आपके पास इतने पैसे हैं?"

"आप बताओ तो सही कितने पैसे चाहिए?"

"शुरू में छोटा काम करने के लिए दस हजार रुपये चाहिए।"

"भाई साहब मैं एक रिक्शा चलाने वाला हूं, और बिस्कुट को चाय की दुकान पर सप्लाई करके मैंने चार हजार रुपये इक्टठा किये हैं। तुम चाहो तो मुझे पांच हजार का कपड़ा दे दो। बाकी ज्यों...ज्यों बिकता रहेगा मैं अपना काम बढ़ाता रहूंगा।"

"मैं आपकी इमानदारी व खुद्दारी से खुश हूं। आप चाहो तो दस हजार रुपये का कपड़ा उठा सकते हो।"

"नहीं भाई! आदमी को उतने ही पांव फैलाने चाहिए जितनी उसकी चादर हो। मैं आपसे उधार नहीं लूंगा। मुझे खुदा पर भरोसा है वह मुझे चार हजार रुपये में ही बरकत देगा।"

"भाई तुम्हें खुदा पर इतना भरोसा है तो खुदा भी कभी अपने भरोसा करने वालों बन्दों को मायूस नहीं करता। तुम खुद्दार हो तुम्हें थोड़ी परेशानी जरूर होगी, परन्तु मुझे भरोसा है तुम कामयाब जरूर होंगे। कल मैं आपके बेचने के हिसाब से कपड़ा निकाल दूंगा। अगर बुरा ना मानो तो एक बात कहूं।"

"कहो, मैं जरूर अमल करुंगा।"

"तुम शुरू में कपड़े की फेरी गांव में करना, वहां आपको कामयाब होने का अच्छा मौका मिल सकता है।"

"यह बात तो मेरे हित की है, इस बात को मैं जरूर मानूंगा। मेरी एक बात और है, जो तुम्हारे से सम्बन्धित है।"

"बताओ ऐसी कौन-सी बात है जो मेरे हित की है।"

"भाई! तुम बहुत खूबसूरत हो, गांव की लड़की तुम जैसे मर्दो को देख तुम पर फिदा हो जायेगी। अगर तुम लड़कियों के चक्कर में फंस गये तो तुम तरक्की नहीं कर सकोगें। अपनी जमा भी गवां दोगे।

"मैं तो पहले ही इश्क में गिरफ्तार हूं। मैं जिससे प्यार करता हूं, उसके अलावा मुझे दुनिया की कोई लड़की अच्छी नहीं लगती। जो पहले

से ही घायल हो उसे क्या समझाना।"

"जिन्दगी में औरत आदमी को बुलन्दी पर पहुंचा सकती है, और वही औरत आदमी को जमीन की गहराई में उतार सकती है। औरत देवी भी है, और दुर्गा भी है। वह अपने प्यार को पाने के लिए दोनों रूप धारण कर सकती है। इसलिए मेरा जो फर्ज था तुम्हें बता दिया। तुम खुद समझदार हो, अपने आगे की जिन्दगी को कैसे तय करोगे। कल आप सुबह आ जाओ आपका कपड़ा निकाल दूंगा और बता दूंगा कि कौन सा कपड़ा किस हिसाब से बिकना है।"

"बहुत-बहुत शुक्रिया। कल आपसे सुबह आकर मिलता हूं। खुदा से दुआ करो कल की सुबह मेरे लिए जिन्दगी की नई रोशनी लेकर आए। आमीन!"

"आमीन, खुदा आपकी मदद करें। आदाब।"

"आदाब।" कहकर अमन दुकानदार के पास से वापस अपने किराये के मकान पर चला आता है। अमन आकर वजू करता है, नमाज पढ़ता है, फिर दो रकात नमाज अदाकर के कुरान खोलकर बैठ जाता है। अमन पढ़ा-लिखा नहीं है। वह कुरान पढ़ना भी नहीं जानता। लेकिन अमन की मां ने अमन को बताया था अगर कुरान की पक्तियों पर अनपढ़ इस तरह पढ़े तो खुदा उसकी मुराद जरूर सुनता है।

अमन को तो सिर्फ फरजाना को पाने की जिद थी। फरजाना के लिए वह हर आग का दरिया पार करना चाहता था। उसकी हर सांस में फरजाना ही बसी थी। वह हर लड़की में फरजाना का अक्स तलाश करता था। इसलिए वह रोज रात को सोने से पहले कुरान पाक में फरजाना को पाने के लिए कुछ इस तरह पढ़ता है।

"ला ई लाहा ला दे! मौहम्मद के सदके में मुझे फरजाना दिला दे।" अमन पढ़ना शुरू करता है। अमन की आंखें में आसूं झलक जाते हैं, वह खुदा से रो-रोकर बस यही सदा लगाता रहता है। इसी हालत में अमन को करीब दो घन्टें से ज्यादा का वक्त लग जाता है। अमन कुरान को बन्द करके चूमकर बन्द करके इस उम्मीद के साथ कि फरजाना उसे जरूर मिल जायेगी। कुरान अपने सर की तरफ रखकर सो जाता है।

अमन सुबह उठकर नमाज अदा करता है, फिर अपनी साईकिल उठाकर बिस्कुट की फेरी पर निकल जाता है। करीब दो घन्टे में फेरी पूरी करके खाने से निपटकर कपड़े के व्यापारी की दुकान पर अपनी साईकिल से पहुंचता है। दुकानदार अमन को देखकर खुश हो जाता है। दुकानदार ने कपड़ा बेचने का तरीका और कपड़े के रेट अमन को समझा कर गठरी अमन को दे देता है और कहता है "अमन भाई तुम्हारा आज पहला दिन है, खुदा का नाम लेकर अपनी जिन्दगी की शुरूआत करो। खुदा आपको आपके कारोबार में तरक्की अता करें। आमीन!"

अमन कपड़े की गठरी उठाकर अपनी मन्जिल की तरफ रवाना हो जाता है। वह कुछ घन्टों का सफर तय करके गांव में पहुंचता है। वह गांव में आवाज लगाते हुए कहता है "तेरा कपड़े वाला आ गया, कपड़ा वाला

आ गया, लेडिज सूट वाला आ गया।" अमन आवाज लगाता हुआ बीच गांव में पहुंच जाता है।

गांव में चौपाल पर रुक जाता है, काफी देर चौपाल पर खड़े रहने के बाद भी कोई ग्राहक उसके के पास नहीं आता। अमन मायूस है। आज पहला दिन है, कोई कपड़ा लेने नहीं आया। क्या खुदा मुझे मायूसी हाथ लगेगी? मेरा कोई कपड़ा गांव में नहीं बिकेगा।

अमन को मायूस देख एक गांव का नौजवान उसके पास आता है।

"भाई, लगता है तुमने कपड़े का काम आज ही शुरू किया है।"

"आपको कैसे पता चला कि मैंने कपड़े का काम आज ही शुरू किया है?"

"तुम्हारा अन्दाज देखकर।"

"क्यों मुझसे आवाज लगानी नहीं आती।"

"नहीं भाई, आज गांव में कपड़ा आवाज लगाकर नहीं बिकता। आज कम्प्यूटर युग है। कपड़ा भी आपको नये अन्दाज से बेचना पड़ेगा।"

"वह कैसे भाई?"

"आज गांव में जो भी कपड़ा बेचने या कुछ और सामान की फेरी करने आता है वह मन्दिर या मस्जिद में लगे लाउडस्पीकर से दस रुपये देकर ऐलान कराता है कि कपड़े वाला आपके गांव में चौपाल पर आया है, वहा आकर कपड़ा अपनी पसन्द का खरीदो।"

"ठीक है, मन्दिर कहां है?"

"मन्दिर चौपाल के पीछे है, तुम वही जाकर ऐलान करा दो। गांव की औरतें चौपाल पर आकर कपड़ा खरीदना शुरू कर देंगी।"

"ठीक है, भाई मैं मन्दिर में जाकर ऐसा ही करता हूं।" अमन मन्दिर पहुंचकर ऐलान करवाता है

"अमन भाई कपड़े वाले आ गये है। लेडिज सूट, सफारी सूट, दुपट्टे आदि सस्ते दामों पर उपलब्ध है।"

ऐलान कराकर अमन भाई चौपाल पर आकर बैठ जाते हैं। थोड़ी देर में गांव की हर उम्र की औरतें आनी शुरू हो जाती हैं। एक जवान लड़की अमन की खूबसूरती देखकर हैरान है। कितना खूबसूरत है जवान है, चलो कपड़े के बहाने इससे बात की जाए।

अमन का कपड़ा बिकने लगता है, कुछ जवान कन्याएं अमन से बातें करके सन्तोश करती हैं, कुछ लड़की कपड़ा खरीदती है। उनमें से एक लड़की अमन से कहती है "कपड़े वाले अब तुम कब आओगे, आज हमारे पास पैसा नहीं है, अगली बार खरीदेंगें।"

"मैं एक हफ्ते में एक बार आपके गांव में आया करूंगा बहन, अगले हफ्ते फिर आऊंगा, इससे अच्छा कपड़ा लेकर तब खरीद लेना।"

"तुम हमें बहन मत कहो, हमारा नाम लिया करो।"

"बहन मुझे तुम्हारा नाम नहीं पता। अबकी बार नाम लेकर बात किया करूंगा।"

"ठीक, हमारा नाम सविता है। अब की जब आओ हमारा नाम लेकर ही पुकारना।" कहकर वह मुस्कराने लगी।

अमन उनकी मुस्कराहट पर ध्यान न देकर कपड़ा बेचता रहता है। कुछ देर बाद अमन का काफी कपड़ा बिक जाता है।

अमन अपनी दुकानदारी से खुश है। शाम के चार बज चुके थे। अमन ने अपना कपड़ा समेटा और खुशी-खुशी घर लौट आता है।

कुछ देर आराम करने के बाद शाम को बिस्कुट की फेरी पर निकल जाता है।

अमन का यह कारवां एक गांव से दूसरे गांव तक चलता रहता है।

अमन अपने कपड़े के कारोबार से खुश है, वह सोचता है अब गांव में जो पैठ लगती है, उसमें जाकर अपनी किस्मत आजमाई जाए।

अब अमन के पास काफी पैसा इकट्ठा होने लगता है। अमन के दिल-दिमाग में फरजाना को पाने का सपना है, अमन उसी को पाने के लिए दर-दर की ठोकरे खाकर अपनी किस्मत आजमाना चाहता है।

अमन को फरजाना से मिले करीब दो माह का समय गुजर चुका है। अमन फरजाना की झलक पाने के लिए बेताब था।

...

उधर फरजाना की आंखें भी अमन की झलक पाने को बेताब थीं। फरजाना सोच रही थी कि दो माह का वक्त गुजर गया अमन मिलने नहीं आया। अमन मुझे धोखा तो नहीं दे गया, या कारोबार में फंसकर मुझे भूल तो नहीं गया। हो सकता है अमन की जिन्दगी में कोई और लड़की तो नहीं आ गई, शायद लड़की के चक्कर में मुझे भूल गया हो। या हो सकता है मेरा अन्दाजा गलत हो। जब तक अमन से न मिला जाय तब तक कोई बात सोचना बेमानी होगी।

लेकिन अमन की खैरियत कैसे मिले। फरजाना सोचती है, तभी उसके दिल में रिक्शेवाले का ख्याल आता है। अमन का रिक्शा फरजाना के जहन में घूमता है। मैं रोज स्कूल जाती हूं। अमन को ढूंढती हूं पर रिक्शे की तरफ कभी ध्यान नहीं गया। कल जब मैं स्कूल जाऊंगी तो रिक्शे पर नजर डालूंगी, शायद अमन का पता चल जाए।

अगले दिन स्कूल से वापस आते समय अमन वाला रिक्शा तलाश करती है। फरजाना को अमन जिस रिक्शे को चलाता था मिल जाता है। फरजाना रिक्शे वाले के पास जाती है और कहती है

"सुनो भाई! एक बात बताओ।"

"पूछो मैडम।"

"अब से दो महीने पहले इस रिक्शे को कोई और चलाता था।"

"मैडम आपका नाम फरजाना तो नहीं है।"

"हां मेरा नाम फरजाना है।"

"मैडम इस रिक्शे को केवल फरजाना ही तलाश कर सकती है, क्योंकि अमन इसे चलाता था, और आपने ही रिक्शा चलाने को अमन से मना किया था।"

"अमन कहां है?"

"मैडम मत पूछो, उसके साथ क्या गुजरी?"

"क्या हुआ सब खैरियत तो है, अमन कैसा है?"

"अमन ठीक है, परन्तु!"

"परन्तु क्या? तुम अमन के बारे में बताओं, मेरा दिल बैचेन है।"

"मैडम उस रात अमन अपने घर पहुंचा और कारोबार करने की बाबत उसने अपनी मां से कही और गाड़ी बेचने की बात कही तभी उसके भाई ने अमन को मारपीट कर घर से निकाल दिया। अमन ने उस रात तो होटल में गुजारी, सुबह आकर अमन मुझसे मिला। अमन सड़क पर था उसे तुम्हें पाने के लिए कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था। तुम्हें दिया गया कारोबार करने का वादा कैसे पूरा करें। अमन खुद्दार है, वह किसी का सहारा लेना नहीं चाहता था। अमन तुम्हें पाने के लिए यह जिन्दगी की लड़ाई खुद लड़ना चाहता था। इसलिए अमन ने तुम से किया हुआ वादा तोड़ दिया।"

"क्या मतलब? अब अमन मुझसे मौहब्बत नहीं करता?"

"मैंने कब ऐसा कहा मैडम।"

"फिर मेरे से किया हुआ कौन-सा वादा तोड़ा?"

"मैडम, अमन ने कहा था मैं अब रिक्शा नहीं चलाऊंगा। रिक्शा न चलाने का वादा तोड़कर दोबारा रिक्शा चलाना शुरू कर दिया। अमन सुबह को चाय की दुकान पर बिस्कुट बेचता और दिन में रिक्शा चलाता है। अमन ने दिन रात मेहनत करके अपना कपड़े का व्यापार शुरू किया। अब अमन का कारोबार चल पड़ा है। अमन देहातो में कपड़े की फेरी करता है। अब तो अमन ने एक मकान भी किराये पर ले लिया है और वहीं रहता है। मुझे भी अमन को मिले एक माह गुजर गया है। अमन रात को फेरी लगाकर लौटता है, इस वजह से मैं उसके पास नहीं जाता। अमन दिन का थका होता है, रात को अमन को परेशान करना ठीक नहीं है। अमन आज भी तुम्हें पाने के लिए मेहनत कर रहा है। सच बताऊं रात को सोने से पहले वह तुम्हारे नाम की तस्बीह पढ़कर ही सोता है। हमने प्यार करने वाले बहुत लोग देखें है, पर अमन जैसा प्यार करने वाला लाखों में एक होता है। फरजाना तुम खुशनसीब हो जो तुम्हें अमन जैसा प्यार करने वाला मिला।"

"तुमने सही कहा। मुझे पता भी नहीं अमन पर क्या गुजरी? मैं तो समझ रही थी अमन मुझे भूल गया है। इसलिए मुझसे मिलने नहीं आया। मुझे क्या पता था अमन ने मेरी खातिर अपना सब कुछ गंवा दिया। मैं अमन से मिलना चाहती हूं। एक आप ही हैं जो मुझे अमन से मिलवा सकते हैं।"

"फरजाना मैं तुमसे वादा नहीं करता, लेकिन कोशिश जरूर करुंगा कि एक मंजिल को दूसरी मंजिल से मिलवा दूं। इन्तजार करो, इन्तजार में जो मजा है, वह मिलने में कहा?"

"अब नहीं रुका जा रहा। मैं अमन से मिलकर ही सुकून हासिल करुंगी। कोई भी जतन करो, तुम मुझे अमन से मिलवा दो।"

"ठीक है फरजाना, तुम्हारी तड़प देखकर मुझे लगा कि अमन का प्यार जिन्दा है। मैं आज ही रात को अमन से मिलकर तुमसे मिलाने की बात अमन से करुंगा। आप कल दोपहर में स्कूल की छुट्टी के बाद

मिलना, अगर मुझे अमन मिल गया तो तुम्हारी बात अमन को बताऊंगा। फरजाना जितनी तुम बेताब मिलने को दिख रही हो, अमन भी तुमसे मिलने को बेताब जरूर होगा। अमन ने तुम्हें पाने के लिए ही जिन्दगी से संघर्ष करने की ठानी है। खुदा से दुआ करो कि अमन अपने मकसद में कामयाब हो।"

"भाई, मेरी जिन्दगी का भी मकसद अमन को पाना है। मैं उसे पाने के लिए दुनिया की हर मुश्किल को लांघ कर अमन के पहलू में आने को बेकरार हूं। मैं अमन से मिलकर बीच में आई पैसो की दीवार को गिराकर अमन से शादी करना चाहती हूं। मुझे खुदा पर भरोसा है, वह मुझे दुनिया का हर सुख देगा, जो एक अमीर आदमी अपनी पत्नी को नहीं दे सकता। जानते हो दुनिया में सबसे बड़ा सुख क्या होता है?"

"नहीं, तुम बताओ।"

"दुनिया का सबसे बड़ा सुख पति-पत्नी के बीच इमानदारी है।"

"मैं आपका मतलब नहीं समझा।"

पति-पत्नी एक-दूसरे को समर्पित हो और इमानदारी से एक दूसरे पर भरोसा रखें, यही सबसे बड़ा सुख है। जो आज के युग में नहीं दिखाई देता। खासकर बड़े अमीर लोगों में ना ही पत्नी ईमानदार होती है, और न ही पति। दोनों एक दूसरे को धोखा देकर अपनी जिन्दगी बसर करके इस दुनिया से रुखसत हो जाते हैं। लोग इनकी इस बेईमानी को अच्छी तरह समझते हैं, फिर भी कुछ नहीं कह पाते, उनका हर ऐब पैसों में छिप जाता है।

"मुझे अपने अमन पर गर्व है, वह मुझे पाने के लिए दुनिया की हर मुश्किल से लड़ रहा है। ऐसा सच्चा आशिक शायद सदियों में पैदा होता है। मैं खुशनसीब हूं मुझे प्यार करने वाला अमन मिला है। ऐ खुदा! अमन जहां भी रहे उसे खुश रखना, उसने मुझे पाने के लिए काफी परेशानी उठाई है। मैं अमन को ज्यादा तकलीफ नहीं देना चाहती। अमन मुझे जब भी मिलेगा, मैं अमन से शादी करके हमेशा-हमेशा के लिए उसकी हो जाऊंगी। भाई कोई भी जतन करो मुझे मेरी जिन्दगी से मिलवा दो।"

"खुदा पर भरोसा रखो तुम जरूर अपनी जिन्दगी से मिलोगी।"

"मुझे कल ही मिलना है।"

"ठीक है फरजाना मैं कोशिश करता हूं।"

"कोशिश नहीं कल अमन को लाना है।"

"ठीक है, फरजाना जैसा तुम चाहती हो वैसा ही होगा।"

"अब ठीक है, मैं जा रही हूं, इस उम्मीद के साथ कल अमन से मुलाकात होगी।"

"खुदा आपकी तमन्ना पूरी करें।"

"आमीन!" फरजाना ने कहा।

फरजाना रिक्शे में बैठकर अमन की यादों को सजोए हुए अपने घर की तरफ चली जाती है।

...

नासिर सोचता है, अमन ने फरजाना से मोहब्बत एक तरफा नहीं की, फरजाना भी अमन के लिए बेताब नजर आती है। पता नहीं यह जवानी का नशा है, या सच्ची मोहब्बत इसका पता तो शादी के बाद ही चलेगा। आज के हालात पर निगाह डाली जाए तो अमन व फरजाना एक दूसरे के लिए ही बने है। खुदा तू तो दिलो का हाल जानता है। मैं दोनो की मोहब्बत से खुश हूं, पर अन्जाम से डरता हूं। एक तरफ पैसे वाले बाप की बेटी है, दूसरी तरफ अपने वजूद को बनाने के लिए जिन्दगी से संघर्ष कर रहा है। एक तरफ बड़ा समाज है जो अपनी इज्जत बचाने को अमन के साथ कुछ भी कर सकता है। अमन एक मजदूर है। ये पैसे वाले लोग चन्द सिक्को में गुंण्डों को खरीद कर अमन के साथ कुछ भी कर सकते है। अमन फरजाना के घरवालों का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। अमन एक लाचार बेबस है।

असल देखा जाए तो अमन को ही अपनी अग्नि परीक्षा देनी पड़ रही है। अमन का साथ उसके घरवालों ने छोड़ दिया। वह तन्हा इस लड़ाई को लड़ रहा है, अगर कुछ ऊंच-नीच हो जाती है तो अमन के घर वाले इसकी मदद के बजाए उसे ही कसूरवार मानकर उस पर जुल्म करेंगें।

अमन को क्या हो गया है? फरजाना के चक्कर में पड़कर वह दुनिया ही भूल गया है। अमन की दुनिया सिर्फ फरजाना के आस-पास ही सिमट कर रह गयी है। मैं अमन का दोस्त हूं, हालात ऐसे भी नहीं कि अमन को समझा सकूं। मैं तो सिर्फ आज एक तमाशाई बन कर रह गया हूं। खैर जो भी हो अच्छा हो। मैं इससे ज्यादा सोच भी नहीं सकता।

फरजाना की वजह से मुझे आज अमन के पास जाना तो पड़ेंगा ही, देखता हूं अमन अब क्या सोच रहा है।

नासिर ने रात दस बजे अमन के पास जाने का फैसला किया, क्योंकि अमन से मिलने का यही वक्त है। वह रात को फेरी करके घर लौटता है।

नासिर रात को अमन से मिलने अमन के घर पहुंचता है। दरवाजा खुला है, अमन जानमाजश् बिछाए है, अमन के सामने कुरान खुला है। वह जोर-जोर से कुरान की लाइनों पर उंगली फेर-फेर कर यह पढ़ता हुआ मिला "लाइलाहा ला दे, मौहम्मद के सदके में मुझे फरजाना दिला दें।" नासिर चुपचाप अमन के पीछे बैठ जाता है। अमन अपनी धुन में है। अमन की आखों से कतार-कतार आसूं बह रहे हैं वह पढ़ता जा रहा है। नासिर को दिल कांप जाता है कि अमन फरजाना की याद में उसे पाने के लिए कितना खोया हुआ है, उसे पता नहीं उसके घर में कौन आया है।

अमन की धुन तो केवल फरजाना को पाने की है। खुदा इतनी लगन वाले को कैसे महरूम कर सकता है। मुझे उम्मीद है कि अमन को फरजाना जरूर मिलेगी।

नासिर एक घन्टा तक अमन के पीछे बैठा अमन की लगन को देखता रहता है।

नासिर से रुका नहीं गया, उसके आंख से आंसू निकल पड़ें। नासिर भी अमन की लगन को देख रो पड़ा। नासिर के रोने की आवाज से अमन

की निगाह नासिर पर पड़ी।

नासिर ने अमन को गले लगाते हुए सीने से चिपका लिया। दोनों दोस्त गले मिलकर रो पड़े।

नासिर ने रोती हुई आवाज में अमन के आसूं पोछते हुए कहा "अमन तेरी फरजाना को तुझ से कोई नहीं छीन सकता। वह तुझे जरूर मिलेगी। फरजाना मेरे पास आई थी, फरजाना तुझसे मिलने को बेकरार है। मैंने फरजाना में तुझे पाने की तड़प देखी है। जिस तरह तू फरजाना के लिए तड़प रहा है, फरजाना भी तेरी एक झलक पाने को बेताब दिखाई देती है।" नासिर ने अमन को फरजाना के बारे में सारी बात बता दी। फिर कहा

"भाई, मैं जानता हूं कि तू फरजाना को पाने के लिए सब कुछ कर रहा है परन्तु तू एक बार फरजाना से मिल लें।"

"हां भाई नासिर मेरा भी दिल बहुत करता है फरजाना से मिलने के लिए लेकिन कारोबार बढ़ाने के चक्कर में इतना वक्त ही नहीं मिल पाया जो फरजाना से मिल सकूं। लेकिन मैं तुझसे वादा करता हूं कल मैं पैठ नहीं जाऊंगा। कल जुमा है। मैं फरजाना से जरूर मिलूंगा।"

"कल कब मिलेगा अमन?"

"नासिर दोपहर को जब उसकी स्कूल से छुटटी होगी।"

"सुबह क्यों नहीं?"

"मैं नहीं चाहता उसकी पढ़ाई का नुकसान हो।"

"ठीक है, मैं कल तेरा इन्तजार करूंगा।"

"नासिर भाई मेरी एक इल्तिजा है।"

"बताओ क्या कहना चाहते हो?"

"तुम मुझे अपनी रिक्शा दे देना।"

"रिक्शा क्यों वैसे नहीं मिल सकता?"

"नासिर भाई रिक्शे के बहाने हम दोनों बात कर लेंगे, वरना दुनिया वाले हम पर कैसी निगाह रखेंगें?"

"यही ठीक है, कल तुम्हें रिक्शा वही खड़ी मिलेगी।"

"बहुत-बहुत शुक्रिया नासिर भाई।"

"अमन मैं चलता हूं। अल्ला हाफिज।"

कहकर नासिर अपने घर लौट आता है।

सुबह फरजाना नासिर के पास आकर अमन के बारे में पूंछती है

"क्या हुआ नासिर भाई अमन का?"

"फरजाना वह आज तुम्हारी छुट्टी के बाद आएगा, वह भी रिक्शा लेकर।"

"रिक्शा क्यों?"

"रिक्शा इसलिए कि वह तुम्हें रिक्शे में बैठाकर दुनिया की नजर से दूर, तुम से दिल की बात करना चाहता है।"

"ठीक है भाई, मैं आपकी शुक्रगुजार हूं कि तुमने मुझे मेरी जिन्दगी से मिलवाने का रास्ता बनाया।"

"बहन फरजाना अमन मेरा दोस्त है। मैं अमन की खुशी के लिए हर काम करने को तैयार हूं। अब वक्त बर्बाद मत करो अपने स्कूल जाओ। अमन चाहता है, फरजाना मन लगाकर पढ़ें उसका वक्त बर्बाद न हो। अगर अमन को पता चला कि नासिर से बात करने पर फरजाना के स्कूल का गेट बन्द हो गया तो वह मुझे कभी माफ नहीं करेगा। इसलिए अमन की खातिर क्लास में जाओ दिल लगाकर पढ़ो फिर अमन से मिलना।"

...

फरजाना मुस्कराती हुई स्कूल में चली जाती है। नासिर भी अपना रिक्शा लेकर स्कूल से चला जाता है।

फरजाना का मन अमन में पड़ा है, फरजाना सोच रही है कि कब स्कूल की छुट्टी हो, कब मैं अमन से मिलंू। आखिरकार स्कूल की छुट्टी का घन्टा बजा। फरजाना ने अपनी कापी-किताबें बैग में रखीं, स्कूल के गेट की तरफ चल दी। स्कूल के गेट के बाहर फरजाना की आखें अमन को तलाश करने लगीं।

फरजाना की निगाह अमन पर पड़ी और अमन की निगाह फरजाना पर पड़ी। फरजाना अपने आप को रोक न सकी, अमन को देखकर फरजाना के आंसू झलक आए। उधर अमन भी अपनी आंखों पर काबू न रख सका तथा अमन की आंखों में भी आसू झलक आयें।

फरजाना तेजी से अमन के रिक्शे की तरफ बढ़ी। वह अमन से मिलकर अपनी मोहब्बत का इजहार करना चाहती थी। अमन ने इशारे से मना किया। फरजाना रिक्शे में बैठकर फूट-फूटकर रोने लगी। अमन की आंखों से आंसूओं की बारिश शुरू हो गयी। सड़क पर चलते लोग रुककर फरजाना व अमन को देखने लगें। अमन ने लोगों की तरफ देखा, अपने को सम्भालते हुए रिक्शा तेजी से बढ़ाकर चल दिया। थोड़ी दूर भीड़ से निकलकर अमन ने रिक्शा रोक दिया, और फरजाना की तरफ हसरत भरी निगाहों से देखने लगा।

फरजाना भी अमन की तरफ देखते हुए बोली "अमन तुमने मेरी खातिर दुनिया के बहुत जख्म खाए हैं। मैं तुम्हें और तकलीफ नहीं दे सकती। तुमने बहुत इम्तीहान दे दिया मेरे अन्दर इससे ज्यादा इम्तीहान लेने की ताकत नहीं है। तुम मुझे अपने साथ ले चलो।"

"फरजाना पागल मत बनो, हिम्मत से काम लो, अभी तुम्हारी पढ़ाई पूरी नहीं हुई है। उसे पूरी करो।"

"अमन मेरा यह बी.ए. का आखरी साल है। इसके बाद मेरी पढ़ाई पूरी हो जायेगी।"

"फरजाना तुम बी.ए. करके टीचर बन जाओगी। मैं तुम्हें टीचर देखना चाहता हूं।"

"नहीं अमन टीचर बनने के लिए मुझे एक पढ़ाई और करनी पड़ेगी।"

"वह कौन-सी पढ़ाई होती है?"

"उसे बी.टी.सी. कहते है, उसके बाद मैं किसी सरकारी स्कूल में मास्टर हो सकती हूं।"

"तुम्हें यह दोनों पढ़ाई पूरी करनी होगी। मैं तभी तुमसे शादी करुंगा।"

"ऐसा क्यों?"

"ऐसा इसलिए मैं लोगों से कह सकूंगा, मैंने अपनी मौहब्बत की खातिर पढ़ाई नहीं छुड़वाई, उसे पूरी करवाई। दूसरी बात और है।"

"वह क्या है? उसे भी बताओ।"

"जिन्दगी चलाने को पैसा चाहिए। जब हम दोनों ही पैसा कमाने लगेंगे तो जिन्दगी आराम से गुजरेगी। हम जल्द ही समाज का मुकाबला करने को तैयार होंगे।"

"यह बात तो है। मेरी पढ़ाई का मकसद भी पूरी होगा, वरना एक आम घरेलू औरत बन कर रह जाऊंगी।"

"पर मैं तुम्हारे बिना जिन्दा नहीं रह सकता। फरजाना जितनी मौहब्बत तुम मुझसे करती हो, मैं भी तुमसे उतनी ही मौहब्बत करता हूं। मौहब्बत बलिदान मागती है, बिना बलिदान के कुछ हासिल नहीं होता।"

"मगर अमन तुम मुझे आज महीनों में दिखाई दिये हो। मैं हर रोज तुम्हें तलाश करती थी,पर तुम मुझे आज मिले हो।"

"फरजाना मुझे परेशानियों ने इतना घेरा मैं उनसे निकल नहीं पाया, लेकिन कोई ऐसा दिन नहीं गया जिस दिन तुम्हें मैंने याद नहीं किया हो।"

"मुझे यकीन है, लेकिन मेरी भी एक शर्त है।"

"वह क्या फरजाना?"

"तुम मुझसे रोज मिलने आओगे।"

"फरजाना मैं तुम से रोज इसलिए नहीं मिल सकता कि मैं इस वक्त कारोबार को जोड़ने में लगा हूं। मैं तुमसे हफ्ते में एक दिन जरूर मिलूंगा।"

"कौन से दिन मिला करोगे?"

"जुम्मे के दिन। बाकी छः दिन कारोबार करूंगा। फरजाना तुम्हें भी मुझसे वादा करना होगा।"

"बताओ क्या वादा करना है?"

"तुम मन लगाकर बी.ए. व बी.टी.सी. की पढ़ाई पूरी करोगी। इतने मेरा भी कारोबार जम जायेगा। फिर हम दोनों शादी करके शाही जीवन गुजारेंगे।"

"ठीक है, मैं तुमसे वादा करती हूं कि आज के बाद मैं पढ़ाई पर ही ध्यान दूंगी।"

"हां यह हुई ना बात।"

बातों बातों में पता ही नहीं चला घर कब आ गया।

"हां घर भी इतनी जल्द आने को था।"

"फरजाना फिक्र मत करो। मैं जुम्में में छुट्टी के वक्त स्कूल के बाहर तुम्हारा इन्तजार करूंगा।"

फरजाना मुस्कराती हुई अपने घर में दाखिल हो जाती है। अमन भी खुशी-खुशी अपने दोस्त नासिर के पास आ जाता है। अमन खुश है।

फरजाना से रास्ते में हुई सारी बातें बताता है। नासिर भी दोनों की बात से खुश हो जाता है।

नासिर अमन से कहता है "भाई तुम्हारा मकसद अब एक होना चाहिए।"

"मेरा मकसद तो फरजाना को पाना है।"

"वह तो ठीक है, परन्तु अब तुम्हारा मकसद कारोबार करना है। उसी पर ध्यान दो। कारोबार जितनी जल्दी अच्छा होगा तुम उतनी ही जल्दी फरजाना को पा सकोगे। फरजाना को पाने के लिए ही तुमने कारोबार किया है। अब कारोबार पर ध्यान लगाकर जुम्मे के दिन फरजाना से मिला करो।"

"हां नासिर भाई यही हम दोनों के हक में बेहतर है। अब मैं चलता हूं। जुम्मे के दिन मुलाकात होगी। खुदा हाफिज।"

"खुदा हाफिज।"

अमन खुशी-खुशी अपने घर आ जाता है। घर आकर दो रकात नमाज शुक्राने की अदा करके खुदा से कहता है "खुदा तुझसे मैंने फरजाना का साथ मांगा था। कुरान की बरकत से तूने मुझे फरजाना दे दी। मैं अब समझा खुदा से सच्चे दिल से अगर कुछ मांगों, खुदा जरूर देता है। मेरी मां ने मुझसे जो कहा था, मैंने उस पर यकीन करके खुदा से रो-रोकर दुआ मांगी। खुदा ने अता कर दी। खुदा तुझसे मेरी एक और इल्तिजा है, मेरा कारोबार अच्छा कर दे। मुझे तुझ पर ही भरोसा है। मुझे उम्मीद है, खुदा से जो मांगों वह देता जरूर है। मेरा कारोबार ठीक होने पर ही मै फरजाना से शादी करूंगा, हांलाकि फरजाना आज भी मुझसे शादी करने के लिए मुझ पर दबाव डाल रही हैं। अगर मैं आज फरजाना से शादी करता हूं तो उसकी पढ़ाई अधूरी रहर जायेगी। वह पढ़ लिखकर भी एक आम औरत बन कर रह जायेगी। मैं चाहता हूं वह पढ़-लिखकर कम-से-कम टीचर तो जरूर बन जाए। टीचर बनने से फरजाना अपने पैरो पर खड़ी होकर समाज से मुकाबला करके अपनी जिन्दगी सही ढंग से गुजार सकेगी। उसे किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। फरजाना के घर वाले बड़े लोग हैं, उनके हाथ पैर भी बड़े होगें, बड़ी पहुंच होगी। वह मुझसे इन्तकाम जरूर लेंगें। हो सकता है वह मेरी जान भी ले लें। अभी तो मैं एक तरफा अपने जीवन से संघर्ष कर रहा हूं। शादी के बाद मुझे दो जगह संघर्ष करना होगा। एक कारोबार से दूसरा फरजाना से, पता नहीं मैं इस संघर्ष में कितना कामयाब हो पाता हूं। खैर कोई बात नहीं मैंने बुर्जुर्गो से सुना है कि जिसके जीवन में संघर्ष नहीं होता, उन्हें जिन्दगी का आन्नद नहीं आता। मैं भी आज जीवन से संघर्ष कर रहा हूं। मुझे अपने खुदा पर भरोसा है, मैं अपनी जिन्दगी की लड़ाई में जरूर कामयाब होऊगा। मेरा काम सच्चे दिल से संघर्ष करना है,जो मैं कर रहा हूं।

सोचता हुआ अमन अपने काम में लग जाता है। शाम हो चुकी है। अमन के बिस्कुट की फेरी का समय हो गया। बिस्कुट की फेरी पर निकल जाता है।

इस तरह अमन को चार माह का समय बीत जाता है। अब अमन का कपड़े का कारोबार अच्छा हो गया है। अमन अब साईकिल पर नहीं रिक्शे में गठरी लादकर शहर की पैंठों में कपड़ा बेचने लगता है। काम बढ़ने की वजह से अमन ने अब बिस्कुट की फेरी बन्द कर दी है। अमन अपना सारा वक्त कपड़े के व्यापार में लगाकर सन्तुष्ट है। जुम्मे के दिन फरजाना से मिलने फरजाना के स्कूल जाता रहता है। फरजाना का बी.ए. का आखरी साल है। पेपर होने वाले हैं। जुम्मे के दिन आखरी पेपर है। अमन फरजाना से मिलने स्कूल पहुंचता है। पेपर खत्म होने पर फरजाना स्कूल से बाहर आती है। अमन रिक्शा लिए फरजाना की इन्तजार में स्कूल के पास एक कोने पर खड़ा है। पेपर खत्म होने पर फरजाना अमन के रिक्शे में आकर बैठ जाती है।

अमन रिक्शा चलाना शुरू करता है, रिक्शा चलाते हुए अमन बात को आगे बढ़ाते हुए कहता है "फरजाना आज तुम्हारे पेपर खत्म हो गये हैं।"

"हां, खुदा ने पेपर तो निपटा दिये हैं पेपर भी अच्छे हुए हैं। अभी एक पेपर और बाकी है।"

"तुम तो कह रही थी कि मेरे पेपर खत्म हो गये, अब कौन सा पेपर बाकी रह गया है?"

"अमन असली पेपर जो जिन्दगी का है। तुमसे शादी करनी है, यह पेपर जितना आसान दिख रहा है, उतना है नहीं।"

"क्या मतलब?"

"मतलब यह है अब तक मैंने जो भी पेपर दिये हैं। उन्हें एग्जामनर जांच कर नम्बर देगा। लेकिन शादी का पेपर है जिसमें समाज, बिरादरी, दौलत, अपने सगे-सम्बन्धी, भाई, मां-बाप सभी एग्जामनर होंगें। यह नम्बर नहीं देंगे। हमारे साथ जुल्म ज्यादती करेंगे। उस पेपर में हम दोनों को साबित कदम रहना होगा। हम दोनों में एक भी फेल हुआ तो दोनों फेल हो जायेंगे।"

असली एग्जाम तो शादी के बाद शुरू होगा। जिसमें हम दोनों एग्जाम देने वाले होंगे, तुम और मैं दोनांे को ही उस एग्जाम की तैयारी करनी होगी।"

फरजाना तुम ठीक कह रही हो। तुम्हारी परीक्षा तो शादी के बाद शुरू होगी। मैं तो पिछले कई महनांे से अपनी परीक्षा दे रहा हूं। इस परीक्षा में मुझे अपने पराये, दोस्त दुश्मन की पहचान हुई है। इस परीक्षा में मेरे अपनो ने पैसे की हवस में मुझे घर तक से निकाल दिया। मुझे इन दिनों में जिन्दगी का काफी तर्जुबा हो गया है। मैं अब जिन्दगी से लड़ना सीख गया हूं। मुझे परेशानियों से डर नहीं लगता। तुम इस परीक्षा में शादी के बाद उतरोगी, तुम्हें ज्यादा परेशानी होगी।"

"मुझे क्यों होगी?"

"तुम्हें इसलिए होगी कि तुमने परेशानी देखी नहीं, सिर्फ खुशी देखी है। तुमने भूख नहीं देखी, तुमने जुल्म देखा नहीं सिर्फ सुना है। जुल्म भी

गैरो का नहीं अपनों का। गैरो के जुल्म से आदमी अपना बचाव कर सकता है, अपनो को तो कुछ कह भी नहीं सकता।"

"फरजाना जितना तुम आसान समझ रही हो उतना है नहीं। तुम लाड-प्यार की पली हो, तुम्हें इस जुल्म से लड़ने में ज्यादा तकलीफ होगी। इसलिए यह परीक्षा तुम्हारी ज्यादा है। मैं तो एक मजदूर था, मजदूर हूं, और मजदूर रहूंगा। तुम जिन्दगी का हर ऐशो-आराम छोड़कर मुझ जैसे गरीब के साथ जिन्दगी गुजारने पर बाजिद हो। इसलिए मैं तुम्हें सोचने का एक मौका और देना चाहता हूं। फरजाना जल्दबाजी में फैसला मत लेना, खूब अपना अच्छा-बुरा सोचकर मुझे जवाब देना। स्कूल की छुट्टी शुरू हो रही है, तुम्हें सोचने का पूरा मौका मिलेगा। मैं कोई भी कदम उठाने से पहले तुम्हें आगाह करना चाहता हूं।"

"अमन, इसका मतलब यह हुआ तुम मुझे बीच मझधार में छोड़ना चाहते हो।"

"नहीं फरजान, मैंने ऐसा कब कहा। यह बाते तुम्हें मैं इसलिए बता रहा हूं कि अभी तुमने तकलीफे नहीं देखी हैं। सिर्फ उनका जिक्र ही सुना है।"

"अमन, मैं तुम्हें पाने के लिए हर जुल्म बर्दाश्त करने को तैयार हूं। अगर ऐसा वक्त आयेगा तो तुम अपनी फरजाना को साबित कदम पाओगे।"

"तुम यह फैसला जज़बात में कर रही हो।"

"हो सकता है अमन तुम मेरा इम्तीहान ले रहे हो। मैं तुम्हारी कसम खाकर कहती हूं कि फरजाना ने तुम्हें अपने दिल से पति माना है, अगर मेरे घर वाले मेरी शादी कहीं और कर देंगें तो उस पति को केवल मेरे मरे हुए बदन का ही मुंह देखना पड़ेगा। मैं इससे ज्यादा आपको क्या यकीन दिलाऊं।"

"फरजाना मुझे तुम्हारी हर बात पर यकीन है।"

"फिर तुम आज ही मुझसे निकाह कर लो। आगे की सारी मुसीबतें खत्म हो जाएगी। मैं आज ही तुम्हारे साथ तुम्हारी पत्नी बनकर जिन्दगी गुजारना शुरू कर देती हूं।"

"फरजाना तुम मेरी बात का बुरा मान गई। अभी तुम्हारी पढ़ाई अधूरी है, और मेरा कारोबार भी अधूरा है। इसलिए अभी दोनों के पास वक्त है दोनों अपने-अपने कामों को इमानदारी से पूरा करके सही वक्त पर अपनी जिन्दगी की शुरुआत करेंगे। तुम्हारे बी.ए. के रिजल्ट कब आयेंगें?"

"दो माह का वक्त तो लग ही जायेगा।"

"अब हमारी मुलाकात दो माह बाद होगी। तुम दो महीने में अपनी बी.टी.सी. की तैयारी करना शुरू करो ताकि परेशानी का सामना न करना पड़े।"

"ठीक है अमन। मगर दो माह का समय कैसे कटेगा। मिलने की सूरत निकालो। हम दोनों मिलकर आगे के बारे में सोच सके।"

"फरजाना इन्सान को उतना ही सोचना चाहिए जितनी वक्त की जरूरत हो। आज वक्त की जरूरत तुम्हें पढ़ना है। मुझे कारोबार बढ़ाना है। रही मिलने की बात तो इसके लिए मैं नासिर से बात करता हूं। तुम्हें पता है, नासिर टैक्सी स्टैण्ड पर मिलता है, उससे कह देना आपसे मिलने आ जाया करूंगा।"

"यह ठीक रहेगा।"

"लो अब तुम्हारा बंगला आ गया।"

"ठीक है अमन, फिर मुलाकात होगी। अपना ख्याल रखना। खुदा हाफिज अमन।"

"खुदा हाफिज फरजाना।"

...

अमन फरजाना को छोड़कर वापस अपने मकान पर आ जाता है। फरजाना भी अपने घर में चली जाती है। फरजाना अमन की बातों को अपने जहन में दोहराती है, और सोचती है कि अमन ने जो बातें रास्ते में की है, वह अमन की जिन्दगी का सही और सच्चा अक्स है। अमन ने परेशानी देखी है। मुझे परेशानियों की आदत डालनी चाहिए। वक्त पता नहीं कब जिन्दगी का इम्तीहान लें। मुझे आने वाली परेशानियों के लिए जेश्हन से तैयार रहना चाहिए। वक्त पता नहीं कैसा-कैसा इम्तिहान लें।

वह इसी सोच में डूबी रहने लगी। फरजाना दो-दो वक्त खाना नहीं खाती थी, जिससे उसे भूख का एहसास हो। फरजाना के घर वाले फरजाना की इन आदतों से परेशान रहने लगे। वह सोचते हैं हंसमुख रहने वाली फरजाना अब इतनी परेशान क्यों रहने लगी। वह दो-तीन वक्त खाना भी नहीं खाती और ना ही नये कपड़े पहनती है, कपड़े भी कई-कई दिन में बदलती है। फरजाना की यह हालत देखकर फरजाना की बड़ी बहन फरजाना से पूछती है

"फरजाना, जब से स्कूल बन्द हुए हैं, तुम खोई-खोई सी रहने लगी हो। तुम खाना भी ठीक से नहीं खाती, कपड़े बदले भी कई-कई दिन हो जाते हैं। कोई बात हो तो मुझे बताओ, उसका हल निकाला जाए।"

"बाजी ऐसी कोई बात नहीं है। मुझे कुछ नहीं हुआ है।"

"फिर वक्त पर खाना क्यों नहीं खाती?"

"बाजी, मैं यह देखना चाहती हूं कि गरीब आदमी भूखे रहकर कैसा महसूस करते हैं। अगर मेरी शादी किसी गरीब आदमी से हो गयी तो मुझे भी भूखा रहना पड़े तो कैसा महसूस होगा?"

"फरजाना तुम कैसी बच्चों वाली बातें करने लगी। हम अमीर बाप की औलाद है, हमारा रिश्ता भी अमीर घर में होगा। फिर हम ऐसा क्यों सोचें?"

"बाजी, वक्त जब बदलता है तो शहनशाह भी फकीर का रूप ले लेते हैं। अमीरी और गरीबी जिन्दगी के दो पहलू हैं, पता नहीं कौन-सा पहलू जिन्दगी में खुदा कब दिखा दें। इसलिए आदमी को चाहिए कि वह हर हाल में रहना सीखें।"

"फरजाना तुम्हारी जिन्दगी में ऐसा बदलाव मैं पहली बार देख रही हूं। मुझे लगता है कि तुम्हारी जिन्दगी में जरूर किसी समझदार मर्द ने दस्तक दी है। यह उसी की बातों का नतीजा दिखाई दे रहा है, वरना एक अमीर बाप की बेटी को इन बातों से क्या मतलब। फरजाना तुम मुझे अपनी जिन्दगी का सच बताओ।"

"बाजी मेरी जिन्दगी में कोई मर्द नहीं है। मैं तो सिर्फ ऐसा ख्याल सोचती हूं।"

"फरजाना यह बातें वही सोचता है जिसे किसी ने सोचने पर मजबूर किया हो। मुझे लगता है तुम्हें भी किसी ने यह सोचने पर मजबूर किया है। यह सच जरूर सामने आ जायेगा।"

"नहीं बाजी, आपने तो बात का बतंगड़ बना दिया है। इन्सान को गरीबी के बारे में गौर नहीं करना चाहिए कि गरीब आदमी अपनी जिन्दगी कैसे गुजारते होगें। अगर हर अमीर उनके बारे में सोचने लगे तो अमीरी-गरीबी का भेदभाव हमेशा के लिए खत्म हो जाए।"

"बहन जो तुम कह रही हो सब सच है। परन्तु इसका दूसरा पहलू भी सोचो।"

"दूसरा पहलू क्या है?"

"दूसरा पहलू यह है बहन अगर खुदा सबको भर पेट खाने को देने लगा तो दुनिया में कोई किसी का काम नहीं करेगा। दुनिया का जो निजशम तुम देख रही हो, खत्म हो जाता। अमीरी-गरीबी खुदा की देन है, वह कब किसको नवाज दे और कब किससे छीन लें, यह खुदा का काम है, बन्दों का नहीं। तुम उतना ही सोचो जितना तुम कर सकती हो। तुम्हारे भूखे रहने से दुनिया को तो रोटी नहीं मिल सकती।"

"बाजी रोटी तो नहीं मिल सकती लेकिन भूख का एहसास तो हो सकता है। वह इस डर से अपने को बुरे कामों से रोककर खुदा की तरफ तो झुक सकता है।"

"फरजाना तुम्हारी इस बात में जान है, तुम्हारी बातों से तो वाकई इन्सानियत झलकने लगती है।"

"बाजी इस्लाम का उसूल भी यही है। भूखें यतीमों, मिसकीनों पर रहम करो। मैं किसी पर रहम तो नहीं कर रही, लेकिन उनके दुख का एहसास कर सकती हूं।"

"फरजाना तुम्हें गरीबी देखने का करीब से मौका मिला है, जिसका असर आपकी जिन्दगी पर छा गया है।"

"यही समझ लो बाजी, गरीबी कोई बुरी चीज नहीं है, इसमें भी जिन्दगी का एहसास छिपा होता है।"

"यह बात तो है फरजाना आब काफी वक्त हो गया है, चलो खाना खा लो।"

"बाजी आप कहती है तो चलो मैं आती हूं।"

"ठीक है, मैं तुम्हारा इन्तजार खाने के टेबिल पर कर रही हूं।"

थोड़ी देर बाद फरजाना खाने की टेबिल पर पहुंचकर अपनी बहन और परिवार के साथ खाना खाती है। घर के सभी लोग खुश हैं कि फरजाना ने हमारे साथ बैठकर खाना खाया। फरजाना का अब जिन्दगी का उसूल बन गया कि वह एक वक्त खाना खाती थी।

वक्त गुजरता गया।

वह दिन भी आ गया जिसका फरजाना और अमन को इन्तजार था। फरजाना के रिजल्ट का। फरजाना फर्स्ट डीविजन से पास हुई। फरजाना नासिर भाई के पास पहुंची और कहा "नासिर भाई अमन से कहो फरजाना पास हो गई है, और तुमसे मिलना चाहती है।"

"ठीक है फरजाना मैं यह खुशखबरी आज ही पहुंचा दूंगा। अमन कल तुमसे मिलने जरूर आएगा।"

...

नासिर ने अमन को फरजाना के पास होने की सूचना दी, तथा फरजाना से मिलने जाने का वादा लिया।

अगले दिन अमन फरजाना से मिलने स्कूल के पास पहुंचता है। थोड़ी देर बाद फरजाना भी पहुंच जाती है। फरजाना जेवर से लदी है। अमन ने हैरत से फरजाना को देखा और कहा "फरजाना यह क्या? तुम तो जेवर से लदी आई हो। मैं तो तुम्हें मुबारकबाद देने आया था।"

"अमन आज मैं आपकी होने आयी हूं, मुझसे रुका नहीं जाता। तुम मुझसे निकाह करके हमेशा-हमेशा के लिए अपनी बना लो।"

"फरजाना मेरी एक शर्त है।"

"प्यार में कौन-सी शर्त आ गई?"

"फरजाना तुम जेवर पहनकर आई हो, पहले इसे घर उतारकर आओ।"

"क्यों?"

"मैंने फरजाना से मौहब्बत की है, उसकी दौलत से नहीं। मुझे केवल फरजाना चाहिए उसकी दौलत नहीं।"

"ठीक है, अमन मैं यह जेवर घर उतारकर वापस अभी आती हूं।"

"ठीक है, मैं तुहारा इन्तजार करूंगा।"

फरजाना घर आकर जेवर जो घर से लेकर गई थी, घर पर उतारे फिर वापस अमन के पास आ जाती है।

"लो मैंने सारा जेवर व पैसा घर रख आई हूं। अब तो मुझे अपना लो।"

"फरजाना मेरी एक और शर्त है।"

"अब क्या शर्त है?"

"यह शर्त मेरी नई नहीं हैं, वही पुरानी है। जब तक तुम बी.टी.सी. नहीं करती मैं तुम्हें अपने साथ नहीं ले जा सकता।"

"तुम मुझसे निकाह भी नहीं करोगे।"

"मैं निकाह को तैयार हूं। मैं निकाह आज ही करूंगा। किन्तु जब तुम्हारी बी.टी.सी. पूरी हो जायेगी तब ही तुम्हें ले जाऊंगा। अगर आपको मेरी शर्त मंजूर हो तो मैं निकाह करने को तैयार हूं।"

"ठीक है अमन, जैसा आप चाहते है मैं वैसा ही करूंगी। चलो मेरे साथ।" अमन नासिर के पास पहुंचता है। नासिर ने अपने साथ तीन आदमी और लिए। सभी इकट्ठा होकर काजी के पास पहुंचते हैं।

"काजी जी, अमन फरजाना का निकाह पढ़ा दें। दोनो बालिग हैं अपनी मर्जी से शादी कर रहे हैं।"

"जब इन दोनों को कोई एतराज नहीं तो मुझे काहे का एतराज।"

काजी जी ने निकाह का रजिस्टर निकाला। रजिस्टर में अमन फरजाना व गवाहान के नाम पते लिखें और गवाहान की मौजूदगी में फरजाना अमन का निकाह पढ़ा दिया।

अमन और फरजाना पति पत्नी के बन्धन में बन्ध गये। अमन फरजाना को उसके घर छोड़कर आया। वापस आकर काजी से निकाह की सनद ली और खुश होकर अपने घर लौट गया।

फरजाना ने बी.टी.सी. में दाखिला लिया और पढ़ाई पर ध्यान देने लगी। जुम्मे के दिन फरजाना अमन से मिलना नहीं भूलती थी। अमन भी जुम्मे के दिन का इन्तजार ईद की तरह करता था।

अब अमन का कपड़े का कारोबार थोड़ा बेहतर होने लगा। अमन फरजाना से निकाह के बाद एक मकान किराये पर लिया, जिसमें फरजाना के हर सुख-सुविधा के हिसाब से बिजली का सामान जैसे फ्रिज, कूलर, पंखें, डबलबैड यानि हर घर में काम आने वाली चीजें इकट्ठा करनी शुरू कर दीं।

कल फरजाना को घर लाऊं तो उसे किसी चीज की परेशानी न हो। अमन कारोबार के साथ घर के सामान लानेपर भी ध्यान देने लगा।

दो साल में अमन ने अपने कारोबार के साथ घर का सारा सामान इकट्ठा कर लिया। अब अमन को इन्तजार था तो फरजाना के बी.टी.सी. होने का, वो दिन भी आया जब फरजाना ने बी.टी.सी. पूरी की।

फरजाना ने अमन से कहा "अमन अब तो मैंने बी.टी.सी. पूरी कर ली है, अब तो अपने साथ मुझे लेकर चलो।"

"फरजाना तुमने जिन्दगी की एक लड़ाई पूरी कर ली है। अब दूसरी लड़ाई हम दोनों को मिलकर लड़नी होगी। आगे की लड़ाई मैं अकेला

नहीं लड़ सकता। इस लड़ाई के लिए तुम्हें मेरा साथ देना होगा।"

"मैं तैयार हूं।"

"इसमें मेरी जान का भी खतरा है, लेकिन अगर मेरा साथ आप दोगी तो दुनिया की लड़ाई आसानी से लड़ सकता हूं।"

"मैं आपसे वादा करती हूं कि मैं आपके हर दुःख-दर्द में साथ रहूंगी।"

"ठीक है, हम दुःखों के समन्दर में चलते हैं।" कहकर अमन ने फरजाना को अपने मकान पर ले गया। जहां अमन ने फरजाना के हर सुख सुविधा की चीजें संजोई थीं। फरजाना जैसे घर में दाखिल हुई घर देखकर फरजाना दंग रह गई। फरजाना ने अमन से पूछा

"अमन तुमने दो कमरों का मकान, उस पर घर की हर ऐशो आराम की चीजें यहां कब इकट्ठा की हैं।"

"फरजाना मेरा सपना तुम्हें पाना था। मैंने तुम्हें पा लिया। अब संसार की हर खुशी मैं तुम्हें देना चाहता हूं। मेरी जिन्दगी अब आप के लिए है। अपनी बरसों पुरानी जिन्दगी को जो प्यासी थी, उसे बुझाकर नई जिन्दगी में खो जाते हैं।"

अगले दिन सुबह फरजाना ने अमन से कहा "अमन तुमने रहने के लिए यही शहर चुना है जो गलत है।"

"क्यों तुम अपने घर वालों से डरती हो?"

"जब प्यार किया है, अपनी मंजिल पा ली है। अब डरना कैसा?"

"फिर फरजाना तुमने ऐसी क्यों बात कही।"

"वह इसलिए लड़की पक्ष अपनी इज्जत से खेलने वाला कोई भी व्यक्ति हो उस व्यक्ति से इन्तकाम की आग में जलता है। वह इन्तकाम लेने के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। अभी एक रात गुजरी है, वह पुलिस से मिलकर कुछ भी साजिश कर सकते हैं। मैं चाहती हूं कि आप एक महीना कहीं बाहर जाकर रह लो।"

"फरजाना मैं मेरठ छोड़कर नहीं जाऊंगा।"

"इसका मतलब तुम चाहते हो झगड़ा हो।"

"मैंने ऐसा कब कहा। तुम कुछ तरकीब सोचो, तुम पढ़ी-लिखी हो, मैं अनपढ़ हूं। तुम मुझसे बेहतर सोच सकती हो।"

"ठीक है, मैं ही कुछ सोचती हूं। ऐसी कौन-सी तरकीब हो जो काम भी हो जाए और झगड़ा भी न हो।"

फरजाना कुछ देर तक सोचती रही, अचानक बोली "अमन मुझे एक तरकीब सूझी है।"

"वह क्या जल्दी बताओ?"

"बताती हूं, जल्दी न करो।" फरजाना ने कहा "मैं एक लेटर अपने अब्बू को लिखती हूं। वह लेटर तुम किसी दूसरे जिले से डाकखाने में मोहर लगवाकर डाल देना। मेरे घर वाले उस लेटर की मोहर देखकर उस शहर के चक्कर काटेंगें। हमारी और उनका ध्यान नहीं जायेगा। वह उसी जिले के चक्कर काटते रहेंगें। इस लेटर से एक बात और होगी।"

"वह क्या बात होगी?"

"वह कोई मुकदमा पुलिस में नहीं लिखा सकेंगें।"

"ऐसा क्यों नहीं करेंगें?"

"क्योंकि मेरा लेटर पढ़ने के बाद बदनामी के डर से वह मुकदमा नहीं लिखायेंगें। महीना दो महीना बाद उन लोगों का गुस्सा ठन्डा हो जाएगा। वह चुप होकर बैठ जायेंगे। इधर हमारी भी जिन्दगी चैन से गुजरेगी। वरना...।"

"वरना क्या?"

"मेरे बड़े जीजाजी इस शहर के बड़े नेता हैं, उनकी अधिकारियों में पकड़ है, वह कुछ भी कर सकते हैं।"

"अच्छा यह बात है तो तुम देर न करो, जल्दी ही लेटर लिखो।"

"मैं लेटर लिखती हूं तुम डाकखाने से लिफाफा लेकर आओ।"

"तुम लेटर लिखों मैं डाकखाने से लिफाफा लाता हूं।"

फरजाना ने अपना लेटर लिखना शुरू किया।

"अब्बू आदाब।"

आप मेरे इस तरह घर छोड़ने से नाराज होगें। मैंने एक अमन नाम के लड़के से शादी कर ली है, मैं उसी के साथ अपनी जिन्दगी आराम से गुजार रही हूं। आप मुझे तलाश करने में अपना वक्त और पैसा बर्बाद न करंे, और हो सके तो मुझे माफ करना। अब्बू जी मेरा तो आपसे बहुत बातंे करने का मन कर रहा है, लेकिन इस वक्त मौका नहीं है। मैं आप से अपने मन की बात खतों के जरिये करती रहूंगी। खुदा हाफिज। आपकी अपनी बेटी फरजाना।

फरजाना ने खत लिखा। अमन डाकखाने से लिफाफा लेकर आ गया। फरजाना ने खत लिफाफे में रखा, लिफाफे पर अपने घर का पता लिखा। अमन को लिफाफा पकड़ाते हुए कहा

"अब तुम इसे दूसरे जिले से जाकर पोस्ट कर दो।"

"मैं इस खत को बुलन्दशहर के डाकखाने से जाकर पोस्ट करता हूं।"

"अमन तुम अभी निकल जाओ। जाते वक्त एक काम जरूर करना।"

"वह क्या काम करूं?"

"मकान का बाहर से ताला लगा देना।"

"ताला क्यों लगा दूं?"

"दीवारों के भी कान होते है। तुम्हारे मिलने वाले भी आ सकते हैं, तो मुझे जवाब देने के लिए दरवाजे पर बाहर आना पड़ेगा, बाहर आने पर बात फैल सकती है, क्योंकि मैं भी इस शहर की हूं। मेरे बाप को भी मेरठ के काफी लोग जानते हैं। घर के बाहर ताला लगाने के बाद हम दोनों ही दुनिया की निगाह से कुछ समय तक महफूज रहेंगें।"

"फरजाना, मैंने तुम्हें कैदखाने में डाल दिया।"

"अमन औरत आजाद कहां होती है? वह तो घर की चारदीवारी में रहकर ही अपनी सारी जिन्दगी काट देती है। और भविश्य में भी औरत के आजाद होने के रास्ते शायद मुश्किल से खुलेगें। अब तुम वक्त बर्बाद

मत करो। घर के बाहर का ताला लगाओ और अपना काम पूरा करके वापस घर आओ। मैं तुम्हारा इन्तजार करूंगी।"

"ठीक है फरजाना, तुम्हें छोड़ने को दिल तो नहीं कर रहा है, लेकिन हालात की मजबूरी है मुझे जाना ही पड़ेगा।"

अमन ने लेटर को जेब में रखा, मकान का बाहर से ताला लगाया और मंजिल की तरफ चल दिया।

कुछ घन्टों के सफर के बाद अमन ने बुलन्दशहर पहुंचकर डाकखाना तलाश किया। अमन को बुलन्दशहर का बड़ा डाकखाना मिल जाता है। अमन डाकखाने जाकर लोगों से पूछता है कि मुझे यह लेटर पोस्ट करना है।

"पोस्ट करना है तो बाहर लेटर बॉक्स में डाल दो, अगर रजिस्ट्री करनी हो तो सामने वाले काउन्टर पर जाकर दे दो। वह तुमसे पैसे लेकर इस लिफाफे की रसीद काटकर आपको दे देगा। फिर समझो आपकी डाक पक्की पहुंचेगी ही।"

"लिफाफे की रजिस्ट्री करना ठीक रहेगा।"

अमन रजिस्ट्री करने के लिए डाकखाने की लाइन में लग जाता है, थोड़ी देर बाद लिफाफे की रसीद अमन को देकर डाकखाने का बाबू पैसे ले लेता है। अमन खुशी-खुशी अपने घर वापस लौट आता है।

"अमन तुम आ गये।"

"फरजाना मैंने लेटर को रजिस्टर्ड डाक से भेजा है, और यह उसकी रसीद ली है।"

"अमन तुम तो अक्ल में मुझसे भी आगे निकले।"

"फरजाना लेटर बॉक्स में लेटर डालने से जाने कब निकलता, और हमारे पास इतना वक्त नहीं हैं। मैं चाहता था हमारा लेटर तुम्हारे घरवालों को जल्द से जल्द मिल सके। मेरे पास जल्दी का यही रास्ता था जो मैंने अपनाया।"

"मुझे खुशी हुई तुमने पहला काम बड़ी इमानदारी व बड़ी सूझ-बूझ से किया है, इसमें हम दोनों की ही भलाई है।"

"ठीक कहती हो फरजाना हमारी छोटी सी दुनिया में कोई परेशानी न आए।"

"आमीन।" फरजाना ने कहा।

"अमन फरजाना अपनी पुरानी यादों में एक दुसरे में खो जाते हैं। और अपनी नई जिन्दगी की शुरूआत करते हैं। शादी को इसी तरह पांच दिन गुजर जाते हैं।"

...

पांच दिन बाद फरजाना का भेजा हुआ रजिस्ट्री लिफाफा फरजाना के घरवालों को मिलता है। लेटर पर फरजाना का नाम देखकर उसकी बहन डाकिये से लिफाफा वसूल करती है, अपने अब्बू को फोन करके सूचना देती है।

"अब्बू, फरजाना का लेटर आया है, आप घर आ जाओ।"

"ठीक है बेटे, मैं अभी आता हूं।" कहकर फरजाना के अब्बू अपनी दुकान छोड़कर घर पहुंचते हैं और लेटर को पढ़ने लगतें हैं। फिर लिफाफे को ऊपर-नीचे तथा पलट कर देख। लिफाफे के पीछे बुलन्दशहर के डाकखाने की मोहर थी। फरजाना के अब्बू ने कहा "काम बन गया।"

"क्या हुआ? खत में ऐसा क्या लिखा है?"

"फरजाना बुलन्दशहर में है, फरजाना का पता आपाजी से लग सकता है।"

"ठीक है जल्दी करो। फरजाना की तलाश कराओ वरना वह कहीं ओर न निकल जाए।"

"फरजाना की मां तुम जितनी परेशान हो उससे कहीं ज्यादा मैं परेशान हूं। तुम तो घर में बैठकर अपने को इतना परेशान महसूस कर रही हो; मैं तो समाज में बैठता हूं। फरजाना ने मुझे समाज में मुंह दिखाने लायक नहीं छोड़ा। मैं दोनों तरफ से रोज मरता हूं और रोज जीता हूं। मैं फरजाना की रिपोर्ट भी नहीं लिखवा सकता, रिपोर्ट लिखाने से फरजाना की खबर अखबारों की सुर्खिया बनेंगी। बची-खुची इज्जत भी मिट्टी में मिल जायेगी। मुझे यह काम खुद ही करना होगा।

"मेरी एक बात मान लो।"

"बताओ क्या कहना चाहती हो?"

"तुम बड़े दामाद डाक्टर को साथ ले लो। वह राजनीति में कदम रखता है उसकी अखबारों में भी पकड़ है। वह हर हथकन्डे से आपकी मदद कर सकता है।"

"यह बात तो मैंने सोची ही नहीं। तुम डाक्टर को फोन लगाओ। वह तुरन्त आकर मुझसे घर मिलें। फिर बैठकर प्लान करते हैं।"

फरजाना की मां डाक्टर को फोन मिलाती है।

"हैल्लो।"

"हैल्लो अम्मा क्या बात है?"

"बेटा घर आ जाओ फरजाना का पता चल गया है।"

"अच्छा मैं अभी आता हूं।"

डाक्टर एक घन्टें में फरजाना के घर पहुंच जाते हैं। दामाद, ससुर प्लान करके बुलन्दशहर पहंुच जाते हैं। बुलन्दशहर डॉक्टर अपने रसूखों का इस्तेमाल करके आठ दिन पूरे बुलन्दशहर में गली-गली छान मारते हैं, लेकिन फरजाना का कही पता नहीं चलता। वह थक हार कर मेरठ आ जाते हैं।

आठ दिन बाद फरजाना का एक और खत मिलता है, जिसमें अलीगढ़ का पता लिख होता है। आठ दिन वह अलीगढ़ में फरजाना की तलाश करते हैं, पर फरजाना का कही पता नहीं चलता।

डाक्टर फरजाना का पता अपने स्तर से भी लगाने की कोशिश करते हैं। डाक्टर को पता चलता है फरजाना अमन के साथ है, अमन कोई और नहीं फरजाना का रिक्शा वाला है। अमन का परिवार लालकुर्ती में रहता हैं। डाक्टर ने अमन के भाई चमन पर दबाव बनाना शुरू किया कि वह

अमन का सही पता बता दें। चमन को सही पता क्या पता ही नहीं था। क्योंकि अमन को घर से भगाने वाला चमन ही हैं। चमन मजबूर है डाक्टर साहब से कहता "अगर अमन ने तुम्हारी फरजाना के साथ ऐसी हरकत की है तो उसका पता जरूर लगाकर तुम्हें दूंगा। मुझे अमन को ढूंढने के लिए आठ दिन का वक्त दे दो।

डाक्टर ने चमन को आठ दिन का वक्त अमन की तलाश करने के लिए दिया।

चमन दिन-रात अमन की तलाश में शहर में चारों ओर भटकने लगा। अमन का कहीं पता न लग सका। चमन थक हार कर बैठ गया।

...

अमन घर का खर्च चलाने के लिए रात को कैन्ट में रिक्शा चलाता था। जितना पैसा जमा था सब खर्च हो चुका था। अमन के सामने पेट भरने के लिए रिक्शा चलाने के अलावा कोई और रास्ता नहीं था।

अमन फरजाना को ताला लगाकर रिक्शा चलाने निकल जाता। रात ग्यारह बजे तक रिक्श चलाकर रात का खाना लेकर घर पहुंचता तब दोनों बैठकर खाना खाते।

अमन फरजाना की जिन्दगी आराम से गुजर रही थी।

अमन भी समय का इन्तजार कर रहा था कब संकट के बादल हटें तथा वह अपना कारोबार शुरू करे। यही सोचकर अमन एक शाम को घर से फरजाना से कहकर निकला "फरजाना मैं न चाहकर भी रिक्शा चला रहा हूं।"

"मुझे अहसास है, यह रिक्शा तुम मेरी खातिर चला रहे हो। मुझे खुशी है कि तुम परेशनियां उठाकर मेरी हर खुशी का ख्याल रखते हो। तुमने मुझे रिक्शा चलाकर हर खुशी दी है। यह दिन भी कट जायेंगे खुदा पर भरोसा रखो।"

"फरजाना रात में मुलाकात होगी।" कहकर अमन रिक्शा चलाने निकल जाता है। अमन के जाने के बाद फरजाना के दिल में अजीब-अजीब ख्याल आने लगते हैं। फरजाना को डर है कि करीब एक माह का समय गुजर गया है, अब्बू और जीजा के आदमी अमन को भूखे भेड़िये की तरह ढंूढ़ रहें होगें। अगर अमन उनके हाथ लग गया वह इन्तकाम लेने के लिए कुछ भी कर सकते हैं। हो सकता है अमन को कल का सूरज देखने को न मिले।

अगर अमन को कुछ हो गया तो मेरा क्या होगा। हो सकता है अब्बू मेरे साथ भी वही करेंगे जो अमन के साथ करेंगें। इससे पहले अमन को कुछ हो मैं मौत को गले लगाना पसन्द करुंगी। खुदा मेरी और अमन की मदद कर, अमन मेरा दीवाना है। अमन ने मेरे दीवानेपन की वजह से अपनी हंसती-खेलती जिन्दगी में आग लगाई है। मैंने अभी अमन के लिए कुछ भी नहीं किया, अभी अमन ही इम्तीहान के दौर से गुजर रहा है, अगर ज्यादा इम्तीहान से गुजरा तो वह टूट जायेंगा। अमन पहले ही वक्त के हाथों टूट चुका है। अमन अब शायद आगे इम्तीहान न दे सके।

असल देखा जाए इम्तीहान में अमीरी-गरीबी की खाई में अगर लड़का पक्ष गरीब है तो उसकी आज़माईश ज्यादा होती है। उसकी गरीबी के कारण उसमें हजारों ऐब निकल आते हैं, क्योंकि वह गरीब है। यह व्यवस्था भी तो इन्सान ने खुद बनाई है। ज्यादहतर मर्द को ही इम्तीहान से गुजरना पड़ता है। खैर मैं तो सोच रही हूं कि खुदा आने वाले वक्त से हम दोनों को लड़ने का हौसला दें। हम समाज में अपनी मिसाल आप बन सकें।

यह सोचते हुए फरजाना अपने घर के कामों में लग जाती है।

अमन भी दिल लगाकर अपने काम में लग जाता हैं। करीब तीन घन्टे रिक्शा चलाकर करीब तीन सौ रुपये कमा लेता है। रात के दस बज चुके है, अमन को फरजाना का ख्याल आता है। अमन रिक्शा मालिक को रिक्शा व किराया देकर अपनी साईकिल उठा खाने के लिए मलियाना के एक होटल पर पहुंचता है।

खाना पैक कराकर अपने घर की तरफ चल देता है। अमन बेखोफ है। उसे पता नहीं उसकी तलाश फरजाना के पिता से ज्यादा उसका भाई कर रहा है। अमन के भाई की नजर अमन पर पड़ती है, वह अमन का पीछा करता है। अमन अपने घर पर पहुंचता है। अमन का भाई उसका घर देख लेता है। अमन घर में दाखिल होता है। चमन जो अमन का भाई है वह फरजाना के पिता को अमन और फरजाना की सूचना दे देता है।

फरजाना के अब्बू किसी को बिना बताए चमन के साथ अमन के घर पहुंचते हैं, चमन भी साथ है। फरजाना के अब्बू दरवाजे की घन्टी बजाकर दरवाजा खटखटाते हैं। अमन और फरजाना अभी खाना खाकर बैठे ही थे। अमन उठा और दरवाजा खोला तो दरवाजे पर चमन और फरजाना के अब्बू खड़े थे।

“अमन घर में आने को नहीं कहोंगे?”

“जी, आप कौन हो?”

“मैं फरजाना का अब्बू हूं।”

“आइए!”

दोनों घर में दाखिल हो जाते हैं।

फरजाना के अब्बू ने वक्श्त की नजाकत को समझते हुए फरजाना से कहा “फरजाना तुम्हें मुझ पर एतबार नहीं था। मुझसे एक बार तो अमन के बारे में कहा होता, मैं अगर मना करता तो मेरी गलती थी। मुझे अमन दामाद के रूप में पसन्द है। अब तुम फरजाना घर चलो। मैं शादी की रस्म सामाजिक तरीके से पूरी करना चाहता हूं। अमन मैं तुमसे वादा करता हूं कि जल्दी ही फरजाना को तुम्हारे साथ रुखसत कर दूंगा। इस वक्त फरजाना तुम मेरे साथ चलो, इसमें हम सब की भलाई है।”

“अगर आपने मना कर दिया तो?”

“ऐसा नहीं होगा।”

“ठीक है, आप फरजाना को साथ ले जा सकते हैं।”

फरजाना अपने अब्बू की बात का यकीन करके उनके साथ अमन की मर्जी से चली जाती है।

अमन भी फरजाना के अब्बू से सन्तुष्ट था।

वह दोनों को घर से बाहर छोड़ने आता है। दुआ-सलाम करके अन्दर लौट आता है।

फरजाना के बहनोई को अपने ससुर की यह बात अच्छी नहीं लगी। वह अगले दिन तीन-चार बदमाश लेकर अमन के साथ मारपीट करता है। मारपीट में अमन बुरी तरह जख्मी हो जाता है। वे जख्मी हालत में अमन को छोड़कर वापस आ जाते है।

मोहल्ले के लोग अमन को सरकारी अस्पतील में भर्ती कराते हैं। मारपीट की खबर सुनकर पुलिस भी अस्पताल पहुंचती है। अमन के ब्यान लिये जाते हैं। अमन घटना को चोरी की घटना कहकर टाल देता है। वह किसी का नाम नहीं लेता।

अमन का इलाज सरकारी अस्पताल में करीब एक हफ्ता होता है, एक हफ्तें में अमन की हालत बेहतर हो जाती है।

अमन लंगड़ाता हुआ अपने घर पहुंचता है। घर में फरजाना के बिना अपने को असहाय महसूस करता है। सोचता है फरजाना के अब्बू ने तो कहा था मैं कुछ दिनों बाद रुखसत कर दूंगा, पर मेरे ऊपर हमला क्यों करवाया? हो सकता है फरजाना के बहनोई का काम हो। यह बात तो जब पता चलेगी जब मैं फरजाना के घर जाऊंगा। अभी फरजाना के अब्बू पर शक करना ठीक नहीं। अभी मुझे जल्दी नहीं करनी चाहिए। मुझे वक्त का इन्तजशर करना चाहिए। यही सोचकर अमन सब्र करता है तथा आराम करता है।

अमन करीब आठ दिन में ठीक हो जाता है, लेकिन चोटों के जख्म अभी बाकी हैं। अमन रिक्शा उठाकर मजदूरी करके जिन्दगी की शुरूआत करता है। कुछ दिन बाद अमन फरजाना से मिलने फरजाना के घर पहुंचता है। कोठी पर लगी बेल बजाता है। थोड़ी देर बाद दरवाजा खुलता है।

“अमन तुम?”

“जी अब्बू।”

“तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई यहां तक आने की?”

“फरजाना मेरी बीवी है, उसे लेने आया हूं।”

“फरजाना का ख्याल दिल से निकाल दो। फरजाना तुम्हें नहीं मिलेगी।”

“आपने तो मुझसे वादा किया था, कि मैं जल्द ही रुखसत कर दूंगा।”

“वह तो फरजाना को अपने साथ लाने के लिए कहा था।”

“फरजाना मेरी पत्नी है, मैंने फरजाना से निकाह किया है। निकाह की रसीद मेरे पास है। फरजाना मेरी कानूनी पत्नी है। आप उसे नहीं रोक सकते। मुझे दूसरा तरीका भी आता है, अपनी पत्नि को ले जाने का।”

“कौन-सा तरीका?”

“कोर्ट है मेरे पास। मैं कोर्ट जाऊंगा, मुझे कोर्ट से इन्साफ जरूर मिलेगा।” अब हमारी मुलाकात कोर्ट में होगी। एक बात और सुनो।”

"बताओ क्या कहना चाहते हो?"

"अगर फरजाना कोर्ट में आ गई तो उसे नहीं रखूंगा, और तलाक भी नहीं दूंगा, कहकर जा रहा हूं।"

"ऐसी धमकी बहुत सुनी है, जो तुम्हारे बस की हो कर लो।"

"खुदा हाफिज!" कहकर अमन फरजाना के घर के गेट से वापस चला आता है। शाम को अपने एक दोस्त वकील के पास पहुंचता है।

"खान साहब आदाब।"

"आदाब अमन भाई, खैरियत तो है। यह हाथ पर पट्टी और सिर पर पट्टी, लगंड़ाकर चलना, किसी से झगड़ा हुआ है?"

"हां वकील साहब।"

"किससे झगड़ा कर बैठें?"

"अपने ससुर से।"

"क्या शादी करली? हमें बताया भी नहीं।"

"वकील साहब शादी तो डेढ़ साल पहले की थी, रुखसत एक माह पहले करके ले गया था।"

"इतनी जल्दी झगड़ा, शादी की थी या कुछ और?"

"वकील साहब कुछ और ही किया था।"

"खुलकर बताओ, वकील से बात छुपाने में तुम्हारा ही नुकसान होगा।"

"वकील साहब मैंने शादी लव मैरिज की थी, बिना सालों व ससुर को बताए। घर से बुलाकर निकाह किया था। निकाह के बाद फरजाना को उसके घर भेज दिया था। एक माह पहले फरजाना को घर लाया था। उसके पिता को पता चला तो झूठ बोलकर फरजाना को मेरे पास से ले गये, फिर मुझ पर हमला करा दिया। ये वही चोटों के निशान हैं। अब मुझे मेरी घरवाली दिलाओ।"

"अमन भाई अब फरजाना उनके कब्जे में हैं, अगर फरजाना तुम्हारे साथ रहने को आज भी तैयार है तो दुनिया की कोई ताकत फरजाना को नहीं रोक सकती। तुम्हें फरजाना पर भरोसा हो तो बात करना वरना...।"

"वरना क्या? फरजाना मेरे बिना मर जायेगी।"

"ठीक है अमन तुम मुझे निकाहनामा की रसीद लाकर दो, बाकी तुम्हारी फरजाना दिलाने का काम मेरा है। शर्त वही है फरजाना को कोर्ट में आकर यह कहना होगा कि अमन मेरा पति है, मै इसके साथ रहना चाहती हूं।"

"वकील साहब मेरी तरह फरजाना भी मुझसे मोहब्बत करती है। तुम मुकदमे की तैयारी करो। मैं निकाह की रसीद साथ लाया हूं। रसीद यह लो।"

"अमन तुम कल दस बजे कचहरी आ जाओ, मैं कल ही तुम्हारा मुकदमा डाल देता हूं।"

"मैं कल कोर्ट में आता हूं। खुदा हाफिज।"

"खुदा हाफिज अमन।"

अगले दिन खानसाहब ने मुकदमा तैयार किया, जिसमें सास, ससुर, फरजाना का जीजा आदि को मुल्जिम बनाते हुए कोर्ट में दरखास्त लगा दी। अदालत में दरखास्त पर एक सप्ताह का समय देकर तारीख नियुक्त करते हुए सास, ससुर, जीजा के विरुद्ध हाजिर होने का आदेश दिया, जिसमें फरजाना को भी तलब कर लिया।

नोटिस सास, ससुर व जीजा के पास पहुंचा, वह नोटिस देखकर घबरा गये। वे नहीं चाहते थे कि उनकी बेटी और वे अदालत के दरवाजे पर कदम रखें। अमन ने भी धमकी दी हुई थी कि अगर फरजाना अदालत की चौखट पर चढ़ गई तो उसे लेकर नहीं जाऊंगा। ससुर को अमन की इस बात का डर भी सता रहा था। ससुर ने समझौते के लिए एक वरिष्ठ समाज सेवी को बीच में डाला, जो अमन और उसके ससुर को अच्छी तरह से जानता था।

अमन समाज सेवी पर भरोसा करता था। बात करने के लिए समाज सेवी के घर का चयन किया गया, और शाम का समय रखा गया। जिसमें फरजाना को भी बुलाया जाना तय हुआ।

अमन नेताजी पर तो भरोसा करता था, फरजाना के जीजा, ससुर सालों पर उसका भरोसा नहीं था। शाम को अमन नेता जी के यहां जाने से पहले एक लकड़ी की टाल में पहुंचा। टाल में इधर-उधर देखा उसकी निगाह एक आठ इंच के डन्डें पर पड़ी। अमन ने वह डन्डा अपनी पैंट में इस तरह लगाया कि सामने वाले को पिस्टल महसूस हो।

बेधड़क होकर नेताजी के यहां पहुंच गया। अमन का एक हाथ अन्दर था, दूसरा बाहर था। अमन की यह हालत देख नेता जी व उनके यहां बैठे ससुर, जीजा, साला अमन को देख घबरा गये कि कही अमन गुस्से में गोली न चला दें, क्योंकि हमने अमन के ऊपर हमला कराया था। यह मौके का फायदा उठाकर कुछ भी कर सकता है। बुर्जुगों से सुना है कि जालिम के पैर कमजोर होते हैं। यह बात यहां साबित होती दिखाई दे रही थी। अमन को इस हालत में देखकर नेता जी ने अमन से कहा

"अमन हम पर भरोसा नहीं था?"

"तुम पर भरोसा था और आज भी है।"

"फिर यह पिस्टल लगाकर क्यों आयें हो?"

नेता जी यहां जो लोग बैठे है, धोखेबाज है। इनकी वजह से आया हूं।"

"फैसले दिलों से होते हैं।"

"मैंने भी फैसला दिल से किया था, यकीन करके।"

"फिर क्या हुआ?"

"मेरे ससुर जो सामने बैठे है इन्होने धोखा किया। डाक्टर साहब व मेरे सालों ने मुझ पर हमला करा दिया। मैं इनकी बातों पर यकीन नहीं कर सकता। मैं आज मारने या मरने आया हूं।"

"अमन विश्वास से काम लो, मैं तुम्हारे साथ नाइन्साफी नहीं होने दूंगा। तुम अपना मुकदमा वापस ले लो।"

"ताकि ये लोग फरजाना को मुझसे छीन लें।"

"नहीं फरजाना से तुम्हें कोई नहीं छीन सकता, फरजाना तुम्हें जरूर मिलेगी।"

"कब मिलेगी?"

"अभी मिलेगी।"

"फरजाना के मिलने के बाद मुकदमा वापस ले लूंगा।"

"हमें तुम्हारे पर भरोसा है।"

"मेरी फरजाना कहां है?"

नेता ने ससुर की तरफ इशारा करते हुए कहा

ससुर ने फरजाना को आवाज दी। फरजाना घर में से बाहर आई। सामने अमन खड़ा था, अमन के सिर पर पट्टी व हाथों में भी पट्टी बंधी थी। फरजाना अमन की हालत देखकर रोती हुई अमन से आकर लिपट गई और बोली "चलो मैं तुम्हारे साथ हूं। तुम्हारी यह हालत किसने बनाई हैं मैं जानती हूं।"

फरजाना के पिता उठे, अमन व फरजाना को गले लगाते हुए बोले

"बेटा हमसे जाने अन्जाने में जो गलती हो गई है उसे माफ कर दो।"

"मैं फरजाना को पाकर पिछली जिन्दगी का साया खत्म करके नई जिन्दगी की शुरूआत करना चाहता हूं। आप मुझे दुआओं से नवाजे यही मेरे लिए सब कुछ है।"

"नहीं बेटा मैं अपनी जिन्दगी का कुफ्फार अदा करना चाहता हूं।"

"मुझसे क्या चाहते हो?"

"मैं तुमसे कुछ नहीं चाहता, इल्तीजा करना चाहता हूं।"

"इल्तीजा नहीं हुक्म करो।"

"बेटा यह दस चीज सोने की व एक लाख रुपये कबूल करें।"

अमन ने जेब से रुमाल निकाला, चीजें व एक लाख रुपये रुमाल में रखकर ससुर को लौटाते हुए कहा "ससुर साहब मुझे न पहले पैसा व सोना चाहिए था और न आज। आप अपनी दौलत अपने पास रखो। मुझे फरजानाा मिल गई दुनिया की हर लड़ाई मैंने जीत ली है। अगर नसीब में होगा तथा इसके भाग में होगा तो दौलत और इकट्ठी हो जायेगी।" कहकर फरजाना का हाथ पकड़ा और अपनी मन्जिल की तरफ रवाना हो गया।

...

अमन व फरजाना अपने घर पहुंचते हैं। आज चांद रात है। अमन का कारोबार बर्बाद हो चुका था। अमन की जेब में बीस रुपये हैं सुबह ईद है, ईद भी वह जो जिन्दगी में खुशियां लेकर पहली बार आई है। अमन ने पांच रुपये का दूध, पांच रुपये में शीर का सामान लिया। नया कपड़ा ना अमन पर है और न ही फरजाना पर है। दोनों एक दुसरे को देखकर रोक नहीं पाते फूट-फूटकर बच्चों की तरह रोने लगते हैं।

यही हालत दोनों की काफी देर तक रहती है। अमन फरजाना एक-दूसरे को दिलासा देते है, हिम्मत बन्धाते हैं। सुबह ईद का दिन आ जाता है।

अमन मायूस दिल से नहा-धोकर पुराने कपड़ों से ईदगाह जाता है। नमाज अदा करता है। फिर घर आकर दोनों बैठक शीर खाते हैं। अमन की जेब में कुल दस रुपये हैं, और ईद का दिन है पहली ईद है घर छोड़कर भी नहीं जाया जा सकता। दोनों उदास है। तभी दरवाजे पर कुन्डी बजी। अमन दरवाजे पर पहुंचता है, दरवाजे पर नासिर खड़ा है। दोनों एक दूसरे को देखकर आंखों में आंसू भर लाते हैं। गले मिले। नासिर अपने दोस्त अमन के लिए थोड़ा गोश्त लेकर आता है। फरजाना को देख खुश हो जाता है। नासिर फरजाना को मुंह दिखाई में बीस रुपये देते हुए कहता है

"फरजाना तुम्हारा प्यार हमेशा ऐसा ही बना रहे। अमन दिल का बुरा नहीं है। गरीबी-अमीरी जिन्दगी के दो पहियें हैं, जो चलते रहते हैं।"

"नासिर भाई, जिन्दगी में अनन्द लाने के लिए जरूरी है कुछ मुश्किल जरूरी है। तभी जीने में आन्नद आता है। मैं अमन के साथ खुश हूं। मैं अमन के साथ अमन की जिन्दगी का पहिया बनकर इसका साथ दूंगी। अभी तक अमन अकेला परेशानीयों से लड़ रहा था। अब मैं आ गई हूं, दोनों मिलकर जिन्दगी से संघर्ष करेंगे, रास्ता जरूर निकल आयेगा।"

"फरजाना तुम क्या करोगी?"

"मैं स्कूल में बच्चों को पढ़ाकर अमन का बोझ कम करुंगी।"

"यह ठीक है, मेरी दुआऐं तुम्हारे साथ हैं। अच्छा मैं चलता हूं।"

"अमन भाई आदाब।"

"आदाब नासिर भाई।"

कहकर नासिर चला जाता है।

अमन की थोड़ी मायूसी कम हुई, अब घर में तीस रुपये हैं। ईद का त्यौहार ठीक बन जायेगा। अमन ने शाम को बिरयानी कवाब आदि बनाए। फरजाना और अमन ने आराम से बैठकर खाकर ईद का जश्न बनाया।

"फरजाना हमने अपनी मंजिल पा ली है। मंजिल पर पहुंचना मुश्किल होता है, लेकिन अपनी मंजिल पर रुके रहना उससे भी ज्यादा मुश्किल है। जहां हम दोनांे हैं, हमारे एक तरफ कुआं और दूसरी तरफ खाई है। यही वक्त है हम समाज के सामने एक अच्छी जिन्दगी जिएं। इसके लिए हमें एक-दूसरे को सहयोग करना होगा, तभी हमारी जिन्दगी ठीक चल सकती है। अब आप मेरी पत्नी हैं, इस जिन्दगी को चलाने के लिए मुझे तुम्हारी जरूरत पेश आयेगी।"

"अमन मैं आपके साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने को तैयार हूं। मुझे बताओ क्या करना है?"

"फरजाना तुमने बी.ए. और बी.टी.सी. की है, क्यों न इसका लाभ उठाया जाए। मेरे एक जानकार हैं उनका एक स्कूल है, तुम उसमें बचों को पढ़ाना शुरू कर दो, ताकि आपका खाली वक्त भी कट जाएगा और मुझे दो रुपये का सहारा भी मिल जायेगा।"

"मैं तैयार हूं, आप अपने दोस्त के पास मुझे लेकर चलो, ताकि बात हो सके।"

"चलो आज ही चलते हैं।"

दोनों साथ स्कूल पहुंचते हैं, जो अमन के दोस्त का स्कूल है। आफिस में अमन का दोस्त बैठा है। दोनों आफिस में दाखिल हो जाते हैं

"मुस्तफा भाई आदाब।"

"आदाब भाई अमन। बहुत दिनों बाद दिखाई दिये, यह मोहर्तमा कौन हैं?"

"यह आपकी भाभी फरजाना हैं।"

"शादी कर ली हमें बताया तक नहीं।"

"मुस्तफा भाई हालात ऐसे थे।"

"चलो अच्छा हुआ, अब ठीक हो गया है। तुमने जिन्दगी को जीने की राह निकाली। बताओ कैसे आना हुआ?"

"मुस्तफा भाई, फरजाना कॉन्वेन्ट स्कूल की पढ़ी-लिखी हैं। बी.ए. और बी.टी.सी. किये हुए है, मैं चाहता हूं कि यह आपके स्कूल में बच्चों को पढ़ाए।"

"यह तो अच्छी बात है, पर...।"

"पर क्या मुस्तफा भाई?"

"भाई मुझे अपने स्कूल में रखने में कोई एतराज नहीं है, पर मैं इनके हिसाब से इन्हें तनख्वाह नहीं दे सकता, पर इनकी मदद जरूर कर सकता हूं।"

"कैसी मदद?"

"मेरा दोस्त बेसिक शिक्षा अधिकारी है। मैं उससे कहकर इनको सरकारी स्कूल में लगवा सकता हूं। कुछ महीने बाद नौकरी निकलेगी, उस वक्त फार्म भर देना।"

"ठीक है, पर जब तक तो कुछ काम चाहिए।"

"चाहो तो मेरे स्कूल में नौकरी कर लो, मैं फरजाना को दौ सौ रुपये प्रति माह दे सकता हूं।"

"मुस्तफा भाई हमारे लिए इस वक्त दौ सौ रुपये बहुत हैं।"

"अमन भाई फरजाना स्कूल के बच्चों को अंग्रेजी का टयूशन देकर करीब दौ सौ रुपये और कमा सकती है।"

"मुझे मंजूर हैं। बताओ कब भेजूं।"

"अमन भाई कल से ही भेज दो।"

"मुस्तफा भाई मैं आपका यह अहसान कैसे भूल सकता हूं। आपने इस वक्त डूबते को सहारा दिया है।"

"अमन भाई इन्सान को इन्सान के काम आना चाहिए। मैंने फरजाना पर कोई एहसान नहीं किया है, मुझे अंग्रेजी पढ़ाने के लिए एक टीचर्स रखनी थी,जो फरजाना खुद चलकर आ गई।"

"मुस्तफा भाई फरजाना कल सात बजे सुबह आपके स्कूल आ जायेंगी।"

"ठीक है, मैं कल फरजाना का इन्तजार करुंगा। खुदा हाफिज।"

"खुदा हाफिज अमन भाई।"

फरजाना व अमन खुशी-खुशी स्कूल से बाहर आते हैं, अमन फरजाना से कहता है

"फरजाना मैंने तुम्हारे साथ कोई ज्यादती तो नहीं की है।"

"नहीं-नहीं अमन यह तो अच्छा हो गया। मैं घर पर अकेली पड़ी-पड़ी बोर हो जाती। इस बहाने से मेरा टाइम भी कट जायेगा और दो पैसे का सहारा लग जाएगा।"

"फरजाना तुम्हारे नौकरी करने से कम से कम मकान का किराया तो निकलेगा। मैं रिक्शा चलाकर कुछ पैसे इकट्ठा करके फिर से कपड़े का काम शुरू करुंगा। जब तक कुछ पैसा इकट्ठा नहीं होता, मुझे रिक्शा चलाना होगा।"

दोनों रास्ते में बाते करते हुए घर आ जाते हैं।

अमन फरजाना को घर छोड़कर रिक्शा चलाने कैन्ट क्षेत्रा निकल जाता है। अमन दिन भर रिक्शा चलाकर शाम को खाने के लिए आटा, दाल घर के लिए सब्जी आदि खरीद कर घर पहुंचता है।

फरजाना खाना बनाती है।

दोनों खाना खाकर अपने पिछले जख्म भूलकर अपनी जिन्दगी की शुरूआत करते हैं।

फरजाना स्कूल जाने लगती है। अमन रिक्शा चलाकर कपड़े के व्यापार के लिए पैसा इकट्ठा करता है। इसी तरह एक माह का समय गुजर जाता है। अमन ने घर में खाने पीने का पूरा सामान एक माह का डाल दिया। तथा करीब पांच हजार रुपये इकट्ठा किये। अमन ने यह पांच हजार रुपये दिन-रात मेहनत करके इक्टठा किये थे।

अमन ने फरजाना से कहा "फरजाना मैं आज शाम को कपड़े व्यापारी के पास जाकर कपड़ा खरीदकर गांव की फेरी शुरू करता हूं।"

शाम को अमन कपड़ा व्यापारी के पास पहुंचता है। अमन को देखकर कपड़ा व्यापारी अमन से पूछता है

"अमन काफी दिन बाद आये हों।"

"हां भाई, हालात के हाथों परेशान था। मेरा सारा कारोबार खत्म हो गया था, अब फिर कपड़े का कारोबार शुरू करना चाहता हूं।"

"अमन भाई तुम्हें मेरे पास पहले ही आ जाना चाहिए था। खैर अब आये हो तो जितना कपड़ा चाहिए ले जाओ।"

"नहीं भाई मेरे पास पांच हजार रुपये हैं, मैं इसी पैसों से कारोबार करना चाहता हूं।"

"अमन भाई खुद्दारी बाकी हैं।"

"अगर इन्सान में खुद्दारी न हो तो वह इन्सान नहीं रहता। मैं उतना पैर फैलाना चाहता हूं जितनी चादर हो।"

"ठीक है अमन भाई। जैसे आप चाहो वैसा करो। बताओ आपको कैसा कपड़ा दूं?"

"मैं देहात में फेरी करना चाहता हूं, उसी हिसाब से मुझे कपड़ा दे दो।"

"ठीक है अमन भाई। जैसा आप चाहते हैं वैसा ही होगा।" दुकानदार ने अमन को देहात के हिसाब से कपड़ा निकाल दिया।

अमन कपड़ें की गठरी बांधकर घर आ जाता है।

अगले दिन अमन ने कपड़ें की गठरी साईकिल पर लगाई और गांव की तरफ चल देता है।

गांव में मन्दिर के लाउडस्पीकर में एलान कराकर अपनी दुकान चौपाल पर लगा देता है। गांव में शादियों का सीजन था, कपड़ा एक दो घन्टे में बिक जाता है।

अमन रोज व्यापारी से कपड़ा खरीदते और देहातों में फेरी करता। शादियां होने की वजह से अमन ने कड़ी मेहनत करके अपना कारोबार जमा लिया।

एक दिन शाम का वक्त था, फरजाना की अचानक तबियत खराब हुई, फरजाना को उल्टी आने लगी। अमन घबरा गया।

फरजाना ने मुस्कराकर अमन की तरफ देखा, बोली

"अमन यह उल्टी खुशी की अलामत है।"

"क्या मतलब?"

"तुम बाप बनने वाले हो।"

अमन झूम उठा। अमन की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वह फरजाना को कोई कष्ट नहीं देना चाहता था। अमन ने फरजाना से कहा

"फरजाना, ऐसे मैं तुम्हें घर में अकेला नहीं रहना चाहिए।"

"अमन अकेले रहना तो हमारा मुकद्दर बन गया है।"

"नहीं फरजाना दिल छोटा न करो, इस मुसीबत की घड़ी में मेरा साथ देने वाली हैं।"

"कौन हैं?"

"मेरी मां है। वह तुम्हारे साथ आकर रह सकती है। हां, फरजाना यह काम तो मुश्किल है पर नामुमकिन नहीं है। औलाद कितनी भी नालायक हो मां की निगाह में वह अच्छी होती है। मेरी गलती है जबसे मेरे भाई ने मुझे घर से निकाला था, मैं मां से मिलने नहीं गया। लेकिन आज मुझे फिर मां की जरूरत है। मैं मां से मिलने जरूर जाऊंगा। वह थोड़ी नाराज जरुर होगी, पर मेरे साथ जरूर आएगी।"

"तुम्हें अपनी मां पर भरोसा है?"

"फरजाना दुनिया में अगर कोई भरोसा करने की चीज है तो वह मां ही है। फरजाना इस बहाने से काफी सालों बाद मां के साथ रहने का मौका मिलेगा। यह मौका फरजाना तुमने मुझे दिया है। मैं इस मौके को हाथ से नहीं जाने दूंगा। मैं अभी मां के पास जाना चाहता हूं।"

"अमन अब रात के दस बजे है, इस वक्त तुम्हारा भाई चमन भी घर होगा। हो सकता है तुम्हारे घर पहुंचने पर पुराने जख्म दोबारा न हरे हो जाएं। चमन तुम्हें देखकर तुम्हारे साथ मारपीट शुरू न कर दें। मैं इस वक्त थोड़ा भी जोखिम लेना नहीं चाहती, बेहतर यह होगा, कल तुम जब गांव की फेरी से लौटकर घर आओगे तब शाम को मां से मिलने जाना।

उस वक्त तुम्हारा भाई भी घर नहीं होगा, और मां से दिल खोलकर अपने दिल की बात कर लेना।"

फरजाना तुम ठीक कहती हो। चमन मेरे साथ कुछ भी कर सकता है, वह मेरी खुशी देखकर उसे बर्दाशत नहीं कर पाता। मुझे भी गुस्सा आ जाता तो कुछ भी हो सकता था, तुमने बहुत दूर की सोची है। मैं आपकी दूर अन्देशी का कायल हो गया हूं। तुम पढ़ी लिखी के साथ समझदार भी हो।"

"अगर समझदार न होती तो अमन का चुनाव अपनी जिन्दगी में ना करती।"

"अच्छा जी, हम तो आज तक यही समझ रहें थे, कि हमने ही फरजाना का चुनाव किया है।"

"अमन एक हाथ से हथेली नहीं बजती। जब तक दूसरे हाथ का सहारा न लिया जाए। तुम मुझे अच्छे लगे मैंने भी तुम्हारी मौहब्बत को पाने के लिए अपना कदम बढ़ाया, तभी हम एक दूसरे के करीब आयें।"

"यह बात तो हकीकत है। तुमने ही मुझे हिम्मत दी। मैं उस हिम्मत पर ही यह आग का दरिया पार कर सका। अमन हर आदमी की कामयाबी के पीछे एक औरत का हाथ होता है। तुम्हारी कामयाबी में भी मेरा हाथ होगा। तुम जिन्दगी में जरूर कामयाब होगे। ऐसे कामयाब होगे कि लोग तुम पर रश्क करेंगें। हर रात के बाद उजाला जरूर आता है। अब तो हमारी जिन्दगी में तीसरा भी दाखिल हो चुका है। खुदा आने वाले के नसीब से हमें जरूर देगा।"

"आमीन! खुदा आने वाले बच्चे का नसीब अच्छा करें। फरजाना तुम खुदा से लड़का या लड़की क्या मांगना पसन्द करोगी।"

"मैं ऊपर वाले से लड़की चाहूंगी।"

"लड़की ही क्यों?"

क्योंकि मैं भी एक लड़की हूं, मुझे पता है लड़की को अपनी जिन्दगी में क्या परेशानी आती है। मैं वह सब दुख दर्द उसकी जिन्दगी में नहीं आने दूंगी। मैं उसकी पढ़ाई के लिए दिन-रात एक कर दूंगीं। उसे किसी काबिल बनाऊंगीं। कल यही समाज गर्व से कह सके कि यह अमन फरजाना की लड़की है। खुदा इस जैसा नसीब हर लड़की को अता करे।"

"आमीन!"

"फरजाना हमें ईमानदारी से जिन्दगी गुजारकर बच्ची को अच्छी तालीम दे। बाकी खुदा पर छोड़े क्योकि हर इन्सान की किस्मत जुदा होती है। खुदा ने किसकी किस्मत में क्या लिखा, वह बेहतर जानता है। हमें खुदा जो भी जिम्मेदारी देगा खुशी से कबूल करके उसे पूरा करने की कौशिश करते रहेंगें। इन्सान का काम है कौशिश करते रहो।"

"सही कहते हो अमन, अभी बच्चा दुनिया में नहीं आया और हम फिजूल की बहस में अपना वक्त बर्बाद करने लगे। इस वक्त जो जिम्मेदारी है उसे निभाओ। अमन अब रात काफी हो चुकी है, अगर बातें खत्म नहीं की तो सुबह हो जायेगी। तुम्हें अपने काम पर भी जाना है,

मुझे स्कूल जाना है, इसलिए सो जाओ।" कहकर फरजाना ने कमरे की लाईट बुझा दी और वो दोनों सो गये।

अगले दिन अमन खुशी-खुशी अपने कपड़ों की गांठ उठकर फेरी करने निकल जाता है। फरजाना भी नई मुस्कान लिए अपने स्कूल की तरफ चली जाती है।

अमन दिन भर अपने कपड़े के कारोबार में मसरुफ होने के बाद शाम को घर लौट आता है।

फरजाना अमन का इन्तजार करती है। दोनों एक साथ खाना खाते हैं, फरजाना अमन को मां से मिलने की बात याद दिलाती है। अमन अपनी मां से मिलने करीब सात बजे अपने भाई के घर पहुंचता है। उस समय मां अपने कमरे में अकेली थी। चमन घर पर नहीं हैं, बच्चें दूसरे कमरे में हैं।

"मां आदाब!"

"अमन!"

"हां मां अमन हूं।"

"इतने दिनों कहा था, तुझे अपनी मां की याद नहीं आयी। मैं तेरे लिए कितना परेशान फिरी, गली-गली मौहल्ले मैंने तुझे कहां-कहां तलाश नहीं किया। तेरे भाई ने तेरे साथ कितने जुल्म किये, मुझे हर जुल्म याद हैं।"

"मां पिछली बातें भूल जा, जैसे मैं भूल गया।"

"बेटे दुनिया में दूसरी खुदाई पैसा है, तेरे भाई ने यह दिखा दिया।"

"मां आज तेरे बेटे के पास बहुत कुछ है, लेकिन मां नहीं थी। मैं तुझे लेने आया हूं।"

"बेटा सड़कों पर रखेगा।"

"नहीं मां तूने अपने बेटे को इतना कमजोर समझा है।"

"हीं बेटा, वक्त इन्सान को तोड़ देता है, इन्सान वही जो मुसीबत में वक्त का मुकाबला करें। तेरा बेटा वक्त से लड़ना सीख गया हैं।"

"बेटा तूने शादी कर ली, तेरे ससुराल वाले तुझे मारना चाहते थे।"

"हां मां, लेकिन अब उनसे मेरा फैसला हो गया है।"

"तो बहू कहां है?"

"बहू तेरे बेटे के घर पर है।"

"यहां क्यों नहीं लाया?"

"मां भाई से बर्दाशत नहीं होती।"

"बेटा चमन तो इस वक्त नहीं हैं। बहू लेता आता।"

"मां तेरी बहू ने तुझे बुलाया है।"

"बेटा, चल मैं अपनी बहू से मिलने को बेताब हूं। तूने बहू के लिए दुनिया के कितने जख्म खाये हैं। अपना घर कारोबार सब छोड़ दिया।"

"मां किसी चीज को पाने के लिए कुछ तो गंवाना पड़ता है। मां तेरे बेटे के पास गंवाने को क्या था, लेकिन इस समाज की ठोकरों ने मुझे जीना सिखा दिया।"

"अब क्या करता है?"

“मां मैं कपड़े का कारोबार करता हूं। बहू स्कूल में पढ़ाती है। तुम्हारी दुआएं मुझे फल रही है।”

“बेटा मां तो यही चाहती है, उसकी औलाद दुनिया में अच्छी हो।”

“हां मां अब सब कुछ ठीक हो गया है। बस मेरी जिन्दगी में तेरी कमी है। सो तू मेरे घर जाकर वह कमी भी पूरी कर देगी।”

“बेटा दिन रात खुदा से यही दुआ मांगती थी, खुदा मेरे अमन पर अपनी रहमत बनाए रखना।”

“हां मां तेरी दुआओं की बरकत से मैं आज जो कुछ हूं तेरी वजह से हूं।”

“मां चल वरना भाई आ जायेगा, कुछ भी हो सकता है।”

“हां बेटा मैं भी नहीं चाहती कि दोनों भाईयों का सामना हो। मैं बाकी जिन्दगी अब तेरे साथ गुजारूंगी। तूने बहुत जख्म खायें हैं। चल बेटा।”

कहकर अमन अपनी मां के साथ अपने घर आ जाता है।

बहू फरजाना सास को पहली बार देखेगी, मां भी अपनी बहू को पहली बार मिलेगी। दोनों एक दूसरे से मिलने को बेताब हैं।

कुछ मिनटों के सफर के बाद अमन का घर आ जाता है। अमन अपनी मां को रिक्शे से उतार कर रिक्शे वाले को पैसे देकर घर में दाखिल होता है। फरजाना सर झुकाकर अपनी सास को सलाम करती है।

मां सलाम का जवाब देकर फरजाना को गले लगा लेती है।

“बेटी तू खुशनसीब है तुझे अमन जैसा शौहर मिला। मैं बड़ी बदनसीब हूं तुझ जैसी खूबसूरत बहू की शादी अपने हाथों से न कर सकी। मेरे दिल में अमन की शादी के क्या-क्या अरमान थे, जो दिल के दिल में रह गये। पैसे ने भाई को भाई से जुदा कर दिया। मैं विधवा दोनों भाई के झगड़ों से सिर्फ आंखों से देखने के अलावा और कुछ न कर सकी। बुढ़ापा भी कितनी बुरी शह होता है। जब मेरा पति था, दुनिया इज्जत करती थी उनके मरने के बाद मैं अपने ही घर में एक कमजोर लाचार सी दिखती हूं। “

“नहीं मां ऐसा नहीं है, अमन जिन्दा है। अमन के रहते हुए मेरी मां को दुनिया बुरी नजर से नहीं देख सकती।”

“बेटा, पिछले दिनों क्या हुआ? तू जब भी मेरा बेटा था।”

“मां मैं तेरे आंखों के सामने घर से निकाल दिया गया था। जब मैं लाचार था, अब नहीं हूं। अब मैंने शादी करके अपनी दुनिया बसाई है। यहां से मुझे कोई नहीं निकाल सकता, मुझे तेरी कमी बार-बार खलती थी। मैं चाहकर भी कुछ नहीं कर सकता था। अब तू मेरे पास आ गई है, मैं दुनिया की हर खुशी तुझे दूंगा ताकि तुझे खुश देख सकूं।”

“खुदा तुझे दुनिया की हर खुशी देगा।”

“मां मैं अपनी मां के रूप में तुम्हारी खिदमत करना चाहती हूं।”

बेटी तुझे दुनिया की हर खुशी दें, तेरा घर खुशियों से भर दें। मैं बूढ़ी दुआओं के अलावा तुम दोनों को और क्या दे सकती हूं।”

मां बैठी बात ही कर रही थी तभी फरजाना को मां के सामने उलटी सी आई। वह मां के पास से भागी। मां की खुशी का इन्तेहा न रही।

मां ने अमन से कहा "बेटा तुझे आने वाली खुशी नसीब हो। मेरी बहू हमल से है, इस वक्त उसे मेरी जरूरत है। खुदा ने मुझे शायद आज इसलिए अपनी बहू से मिलवाया है। मैं तुझे छोड़कर नहीं जाऊंगी, बल्कि तेरा जचखाना अपने हाथों से अन्जाम दूंगी। मैंने बहुत दिन रो-रोकर गुजरे हैं। अब खुदा ने खुशी एक नहीं दो एक साथ दी है। एक अमन से मिलने की दूसरी नये मेहमान की। खुदा तेरा जो भी फैसला होता है सोच समझकर ही होता है। मैं तेरी शुक्रगुजार हूं। अमन पानी ला वजू करके दो रकात नमाज शुक्राने की अदा करूं ताकि तेरे छोटे से परिवार को किसी की बद निगाह न लगे।"

अमन लौटे में वजू का पानी लाता है।

फरजाना जानामाज बिछाती है। अमन ने मां को वजू कराया। मां जानामाज पर बैठकर दो रकात नमाज शुकराने की अदा करती है। मां खुश है।

फरजाना ने खाना बनाया, तीनों ने दस्तरखान पर इकट्ठा खाना खाया। इधर-उधर की बातें की फिर सोने चले जाते हैं।

इसी तरह अमन फरजाना और मां के बीच एक परिवार समाज के छोटे पायदान से अपनी जिन्दगी की शुरूआत करता है।

फरजाना प्राइवेट स्कूल में बच्चों को पढ़ाती है। अमन गांव में फेरी करके अपना कारोबार बढ़ा रहा था। मां दोनों को अपना स्नेह देकर हौसला बढ़ाती रहती है।

कुछ महीनो बाद फरजाना ने एक पुत्री को जन्म दिया। अमन के आंगन में खुशी की लहर दौड़ गई। फरजाना के परिवार ने फरजाना से रिश्ता तोड़ दिया है।

अमन की मां, सास और मां की कमी पूरी करते हुए अपने को किस्मत वाली मानती है।

इसी तरह जिन्दगी के तीन साल गुजर जाते है। बच्ची का नाम दादी ने गुलअफशा रखा।

दादी गुलअफशा को स्कूल छोड़कर और लेकर आती है।

अमन अपनी मां को अपने पास रखने से बच्ची की तरफ से इत्मीनान का एहसास महसूस करता है।

फरजाना जिस स्कूल में बच्चों को पढ़ाती हैं, उस स्कूल के मैनेजर ने फरजाना से कहा

"फरजाना अमन भाई को भेजना। बी.एस.ए. में कुछ सरकारी नौकरी निकली है। तुम्हें सरकारी स्कूल में लगवाना है, इस बारे में बात करनी है।"

"ठीक है सर, मैं आज शाम को ही उनसे बात करके सुबह साथ लेती आऊंगी।"

"ठीक है मैं कल इन्तजार करूंगा।"

अगले दिन अमन फरजाना के साथ स्कूल पहुंचता है। मैनेजर बी.एस.ए. की जानकारी देते हुए कहता है "अमन भाई मौका अच्छा है, फार्म भरवा दो।"

"मैंने कब मना किया है, यह काम तो आपको करना है।"

"अमन भाई काम तो मुझे ही करना है, पर कुछ खर्च करना पड़ेंगा।"

"मैं तैयार हूं। कितना खर्च होगा?"

"करीब बाईस हजार रुपये लग जायेंगे।"

"बाईस हजार रुपये।" अमन ने हैरत से कहा।

"हां अमन भाई, बहुत लम्बी लाईन है।"

"मैनेजर साहब मैं फरजाना के लिए इतनी रकम खर्च करने को तैयार हूं। मैं कल आपको इन्तजाम करके कुछ पैसे दे दूंगा। बाकी दो चार रोज में इन्तजाम कर लूंगा।"

"अमन भाई बस आप हां कर दें तुम्हारे लिए मैं भी पैसों का इन्तजाम कर दूंगा।"

"मैनेजर साहब मैं आपको कल बताऊंगा।"

"ठीक है।" अमन मैनेजर साहब के पास से उठकर घर आता है, अपना हिसाब चेक करता है।

अमन के पास कुल पन्द्रह हजार रुपये थे, तथा एक पुराना स्कूटर है। अमन ने यह स्कूटर एक मिस्त्री को तीन हजार रुपये में बेच दिया। अब अमन के पास अठारह हजार रुपये हैं। अमन अठारह हजार रुपये लेकर अगले दिन मैनेजर के पास पहुंचता है।

"मैनेजर साहब मेरे पास कुल अठारह हजार रुपये इकट्ठे हुए हैं, बाकी चार हजार रुपये मैं आपको जल्द ही अदा कर दूंगा।"

"ठीक है अमन भाई आप बाकी पैसे मुझे बाद में दे देना। जब काम हो जाए।"

"नहीं मैनेजर साहब, मुझे आप पर भरोसा है। मैं जल्द ही आपको अदा कर दूंगा।"

पैसे लेकर मैनेजर ने कागजों की खानापूर्ति करते हुए नौकरी के लिए दरखास्त लगा दी।

कुछ दिनों में अमन ने बाकी पैसा भी अदा कर दिया।

कुछ दिन बाद फरजाना की सरकारी नौकरी लग जाती है।

अब फरजाना सरकारी स्कूल में नौकर है।

अमन का ख्वाब पूरा हुआ।

अमन फरजाना खुश हैं, जिन्दगी रास्ते पर आ गई है।

...

अमन का कारोबार भी धीरे-धीरे बढ़ने लगा। अमन की लड़की भी क्लास दर क्लास पास करती जा रही थी।

इसी तरह जिन्दगी के बीस साल गुजर गये। यह पता नहीं चला जिन्दगी किधर को निकल गई। गुलअफशा ने भी एम.ए. अंग्रेजी में करके एक चैनल में नौकरी कर ली है। अमन ने एक अच्छा-सा मकान जो कोठी की शक्ल का है बनाया है।

अमन ने अपनी लड़की का रिश्ता एक सिविल इन्जीनियर से तय कर दिया है।

शादी की तारीख तय हो चुकी है। अमन शादी में दिल के सारे अरमान निकालना चाहता है।

यह बात फरजाना के माता-पिता को पता चलती है। अमन अपनी लड़की की शादी कर रहा है। उन्हें गैरत आती है, वह फरजाना के घर पहुचकर फरजाना से अपनी गलती की माफी मांगते हुए कहते हैं

"फरजाना हम लोग गलती पर थे। हमें माफ कर दो।"

"अब्बू माफी मुझसे नहीं अमन से मांगों। अमन आपकी निगाह में एक रिक्शा वाला था। आज उसी रिक्शे वाले की लड़की ने एक बाइज्जत नौकरी कर रही है।"

"बेटी उस वक्त के हालात ऐसे ही थे। मैं मजबूर था।"

"मैं तो मजबूर नहीं थी, तुमने इन्सानियत के मुकाबले पैसे को ज्यादा तरजीह दी थी।"

"बेटी आंखों देखा जहर कोई नहीं पी सकता। मैं तो तेरे भले के लिए सोचता था।"

"अब्बू खुदा एक तिनके में जान डाल सकता है, जैसा अमन के साथ किया।"

"बेटी यह अमन की लगन है, उसी का नतीजा है। अमन की खुद्दारी ने यह मुकाम हासिल किया है। बेटी मुझे माफ कर दे, मैं फरियाद लेकर आया हूं। बेटा अमन तुम्हारे साथ वाकई ज्यादती हुई है, जो वक्त गुजरा तुम उसे भूल जाओ।"

"अब्बू कैसे भूल जाऊं। मुझे तो मेरे अपनो ने ही घर से चन्द पैसों की खातिर निकाल दिया। मैं अपनी कड़ी मेहनत और फरजाना के सब्र जब्त से इस मुकाम पर पहुंचा हूं।"

"बेटा, सब कुछ ठीक है, गुस्सा थूक दे। खुदा को भी तक्कबुर पसन्द नहीं है।"

"ठीक है, मेरी एक शर्त है।"

"क्या शर्त है?"

"मैं तुमसे भात में कुछ नहीं लूंगा।"

"बेटा हमने फरजाना को कुछ नहीं दिया था। अब अपनी नवासी को देना चाहते हैं, तुम्हें नहीं। तुम हां कर दो। मेरी बेटी के पास सब कुछ है, उसे किसी की भीख या दया की जरूरत नहीं है।"

इसी बीच अमन की मां बीच में आ जाती है, मां अमन को डाटते हुए कहती है "अमन किसी के अरमानों को इस तरह नहीं तोड़ा करते। यह अपनी नवासी को दे रहे हैं देने दे।"

"जैसा उचित समझो करो।"

फरजाना के पिता ने भात में तीन लाख रुपये व सोने की कुछ चीजें फरजाना को दीं।

अमन ने तीन लाख रुपये फरजाना से लेकर अपने ससुर को दो लाख और मिलाकर देते हुए कहा "आप पांच लाख रुपये में गाड़ी लाकर

मेरी गुड़िया को दे दो। इसमें दोनों की बात रह जायेगी कि लड़की के मामा ने अपनी भान्जी को गाड़ी दी।"

"अमन आज फिर तुम बाजी मार गये। मैं बाजी हार गया। जैसा तुम चाहते हो वैसा ही होगा।"

शादी के दिन बड़ी धूमधम से लड़की का निकाह हुआ। शाम को लड़की के मामा ने लड़की को डोली में बैठाया। लड़की को अमन ने नम आंखों से विदा किया।

"तो खान साहब इस तरह मेरी जिन्दगी का एक हिस्सा पूरा हो गया। यह हिस्सा एक ख्वाब बनकर रह गया है। अब तो जिन्दगी का एक फर्ज और अदा करना है।"

"अब कौन सा फर्ज रह गया है, अमन भाई?"

"हज करना। मैं हज करके अपनी जिन्दगी का यह फर्ज भी पूरा करना चाहता हूं।"

"अमन भाई खुदा ने जहां तुम्हारे हर फर्ज अदा किये है, यह भी खुदा जरूर पूरा करेगा।"

"आमीन!"

यह अमन की जिन्दगी के कुछ अनछुए पहलू थे, जो लेखक ने अपने शब्दों में बयान किये हैं।

समाप्त

Mark as Finished